Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا

(सूरः बनी ईसराइल : 106)

अनुवाद : उसने कहा कि यह मेरे रब की रहमत है अतः जब मेरे रब वादा आएगा तो वह उसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा और बेशक मेरे रब का वादा सच्चा है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 8
अंक-48

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

15 जमादिउल अव्वल 1445 हिज्री कमरी, 30 नबुव्वत 1402 हिज्री शम्सी, 30 नवम्बर 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

तौहीन-ए-रिसालत की किसी किस्म की कोई ऐसी सज़ा शरीयत-ए-इस्लाम में मौजूद नहीं है और न ही इस तरह के वाक़ियात की कोई हक़ीक़त है

मुशरेकीन भी अपने शिर्क को दीन समझते थे और एक ख़ुदा की इबादत को गुमराही। आजकल भी हाल यही है

उमेर बिन वहब के क़बूल-ए-इस्लाम का ईमान अफ़रोज़ वाक़िया

उमेर ने अर्ज़ किया कि मालूम होता है कि ख़ुदा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ है जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हमारे इरादों से इत्तिला दे दी अन्यथा जिस समय मेरी और सफ़वान की बात हुई थी

इस समय वहां कोई तीसरा शख़्स मौजूद नहीं था और शायद ख़ुदा ने यह तजवीज़ मेरे ईमान लाने ही के लिए करवाई है और मैं सच्चे दिल से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर लाता हूँ

बदर के बाद बाअज़ लोग मुस्लमान भी हुए लेकिन मुनाफ़ेक़ाना रंग रखते थे उनमें अब्दुल्लाह बिन ऊबे बिन सलूल भी था

जितना अरसा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम قَرۡقَرَۃُ الۡکُدۡر में क़ियाम पज़ीर रहे किसी को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुक़ाबले में आने की साहस नहीं हुआ। इस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बग़ैर किसी लड़ाई के फ़तहयाब हो कर वापस आ गए

हिज्रत के दूसरे वर्ष रमज़ान के इख़तेताम पर यक्म को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहली ईदुल -फ़ित्र अदा फ़रमाई

इस्लाम की ईदें अपने अंदर एक अजीब शान रखती हैं। अतः याद रखना चाहिए कि ईदों का यह महत्व है कि हमेशा केवल ख़ुशियां नहीं बल्कि अल्लाह तआला का वर्णन भी होना चाहिए और इबादत भी होनी चाहिए

अस्मा बिन्त मरवान के क़तल की रिवायत का विश्लेषणात्मक अध्यन और तौहीन-ए-रिसालत की सज़ा से संबंधित एक संदिग्ध रिवायत पर विस्तारपूर्वक बेहस

तारीख़-ओ-सीरत की कुछ पुस्तकों में यह घटना मिलता है लेकिन सहा सित्ता और हदीस की किसी भी मोतबर किताब में इस का वर्णन नहीं है

शिद्दत-पसंद मुल्ला ने इन वाक़ियात को एहमियत देकर इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीम को बदनाम किया है और आजकल इसी तरह मन-घड़त कहानियां बना कर ये मौलवी अहमदियों के ख़िलाफ़ भी शिद्दत पसंदी के इज़हार करते रहते हैं और लोगों को भड़काते रहते हैं

ग़ज़व-ए-बदर के बाद वक़ूअ पज़ीर होने वाले बाअज़ वाक़ियात बशमूल ग़ज़व-ए-बनू सुलेमिया करकर्तुल कदर का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 29 सितंबर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

जंग-ए-बदर के बाद के वाक़ियात का वर्णन हो रहा था। इन वाक़ियात से अगर तारीख़ पढ़ें तो जहां हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवनी और ज़िंदगी के वाक़ियात का भी पता चलता है वहां बाअज़ तारीख़ी बातें भी इलम में आती हैं और बाअज़ ग़लत रिवायात की निशानदेही भी होती है जिन्हों ने इस्लाम का ग़लत चेहरा ग़ैरों के सामने पेश किया है और मुख़ालेफ़ीन-ए-इस्लाम इस से इस्लाम को बदनाम करने का फ़ायदा उठाते हैं और शिद्दत-पसंद मुस्लमान अपने उद्देश्य पूरे करते हैं।

बहरहाल आज जो वाक़ियात मैं वर्णन करने लगा हूँ उन में पहला वाक़िया उमेर बिन वहब का है जो जंग के बाद अपनी नाकामी, मुशरेकीन को जो नाकामी हुई थी उस का बदला लेने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़तल के लिए मक्का से मदीना आया था लेकिन वहां अल्लाह तआला की तक़दीर ने कुछ और काम किया और उसे इस्लाम क़बूल करने की तौफ़ीक़ बख़शी। इस की तफ़सील में लिखा है कि बदर के क़ैदियों में वह्ब बिन उमेर भी था जो बाद में मुस्लमान हो गया। उसे रफ़ाआ बिन राफ़े ने गिरफ़्तार किया था। उस का बाप उमेर क़ुरैश के सरगनों में से था अर्थात उमेर बिन वहब जिस ने मक्का में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा को बहुत ज़्यादा तकलीफ़ें पहुंचाई थीं परंतु फिर ग़ज़व-ए-बदर के बाद ये मुस्लमान हो गया। इस की तफ़सील यूं है कि मुस्लमान होने से पहले उमेर और सफ़वान बिन उमय्या एक दिन मक्का में हतीम के पास बैठे हुए थे। सफ़वान उस समय मुस्लमान नहीं हुआ था। ये दोनों जंग-ए-बदर में अपनी शिकस्त और अपने बड़े बड़े सरदारों के मुताल्लिक़ बातें कर रहे थे जो इस जंग में क़तल हो गए थे। सफ़वान ने कहा ख़ुदा की क़सम! इन सरदारों के क़तल हो जाने के बाद ज़िंदगी का मज़ा ही ख़त्म हो गया है। उमेर ने कहा कि ख़ुदा की क़सम! तुम सच्च कहते हो। उसने कहा कि अगर मेरे ऊपर एक शख़्स का क़र्ज़ न होता जिसकी अदायगी का मेरे पास कोई इंतेज़ाम नहीं हो रहा और फिर अपने पीछे अपने पत्नी बच्चों की परेशानी का ख़्याल न होता जो मेरे बाद तंगदस्ती में ग्रस्त हो सकते हैं तो मैं मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुंच कर उनको क़तल कर देता क्योंकि मेरे वहां पहुंचने की वजह भी मौजूद है कि मेरा बेटा उनके हाथों में क़ैद है। ये सुनते ही सफ़ ने उमेर के क़र्ज़ की ज़िम्मेदारी ले ली और कहा तुम्हारा क़र्ज़ मेरे ज़िम्मा रहा मैं इस को अदा कर दूँगा और तुम्हारे पत्नी बच्चे मेरे पत्नी बच्चों के साथ रहेंगे और जब तक वे ज़िंदा हैं मैं उनकी कफ़ालत और परवरिश का ज़िम्मा लेता हूँ। तुम जाओ और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) क़तल कर डालो। उमेर ये सुनते ही जाने पर राज़ी हो गया। उसने सफ़वान से कहा। मेरे और तुम्हारे दरमयान जो यह मामला हुआ है इस को राज़ में रखना। सफ़वान ने वादा कर लिया। अब उमेर ने घर जा कर अपनी तलवार निकाली उस पर धार लगाई, उस को ज़हर में बुझाया और इस के बाद मक्का से रवाना हो कर मदीना पहुंचा।

जब उमेर मस्जिद नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पहुंचा तो यहां हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कुछ दूसरे मुस्लमानों के साथ बैठे हुए थे और ग़ज़व-ए-बदर की बातें कर रहे थे। उमेर ने जूंही मस्जिद नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दरवाज़े पर अपनी ऊंटनी बिठाई तो हज़रत उमेर की इस पर नज़र पड़ी कि उमेर तलवार हाथ में लिए उतर रहा है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसको देखते ही कहा कि ख़ुदा का दुश्मन उमेर बिन वहब ज़रूर किसी बुरे इरादे से यहां आया है। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौरन ही वहां से उठकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हिज्र-ए-मुबारक में गए और अर्ज़ किया : हे पैग़म्बर-ए-ख़ुदाव ख़ुदा का यह दुश्मन उमेर बिन वहब नंगी तलवार लिए आया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। उसे मेरे पास अंदर ले आओ। कोई बात नहीं मेरे पास अंदर ले आओ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो सीधे उमेर के पास आए और तलवार का जो पटका उसकी गर्दन में पड़ा हुआ था उसको मज़बूती से पकड़ कर उमेर को ले चले। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ उस समय वहां जो अंसारी मुस्लमान मौजूद थे उनसे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मेरे साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास अन्दर चलो और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़रीब ही बैठो क्योंकि उसकी तरफ़ से मुझे इतमीनान नहीं है। इसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उसे लेकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास अंदर आए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब देखा कि हज़रत ऊमर रज़ियल्लाहु अन्हु इस हाल में आ रहे हैं कि हाथ से अमीर की तलवार का वह पटका मज़बूती से पकड़ा हुआ है जो उस की गर्दन में था तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। उमर इस को छोड़ दो। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उमेर क़रीब आओ। इसलिए अमीर क़रीब आया और उसने जाहिलियत के आदाब के मुताबिक़ اَنْعَمُوْا صَبَاحًا कहते हुए सलाम किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। उमेर हमें इस्लाम ने तुम्हारे इस सलाम से बेहतर सलाम से सरफ़राज़ फ़रमाया है जो जन्नत वालों का सलाम है। तुम किस लिए आए हो? उमेर ने कहा मैं अपने उस क़ैदी अर्थात अपने बेटे के सिलसिले में बात करने आया हूँ जो आप लोगों के क़बज़े में है। मेरा निवेदन है कि इसके सिलसिले में आप लोग अच्छा और नेक मुआमला करें। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसकी नंगी तलवार देख के फ़रमाया : फिर इस तलवार का क्या मतलब है? उमेर ने कहा ख़ुदा उस तलवार का नास करे। क्या आपने हमें किसी काबिल छोड़ा है? इस तलवार ने पहले कौन सा हमारा साथ दिया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मुझे सच्च-सच्च बताओ तुम किस उद्देश्य से आए हो? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उस की बात पर यक़ीन नहीं आया। उमेर ने कहा मैं वाक़ई उसके सिवा और किसी इरादे से नहीं आया कि अपने क़ैदी के मुताल्लिक़ आपसे बात करूँ। तब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : नहीं बल्कि एक दिन तुम और सफ़वान बिन उमय्या हतीम के पास बैठे थे और क़ुरैश के इन मक़्तूलों की बातें कर रहे थे जिनको जंग-ए-बदर में क़तल कर के गढ़े में डाला गया है। इस समय तुमने सफ़वान से कहा था कि अगर मुझ पर एक क़र्ज़ न होता और अपने पत्नी बच्चों की फ़िक्र न होती तो मैं जा कर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़तल कर देता। सफ़वान ने मेरे क़तल की शर्त पर तुम्हारा क़र्ज़ उतारने और पत्नी बच्चों की ज़िम्मेदारी ले ली थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ये सारी बातें अल्लाह तआला ने बता दी थीं कि इस तरह हुआ। यह सुना तो इस रिवायत में यह लिखा है कि उमेर फ़ौरन बोल उठा कि : मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आसमान से जो ख़बरें आया करती हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर जो वह्यी नाज़िल होती है हम इस को झुठलाया करते थे और जहां तक इस मुआमले का ताल्लुक़ है तो उस समय हतीम के पास मेरे और सफ़वान के सिवा कोई तीसरा शख़्स मौजूद नहीं था और न ही किसी और को हमारी इस गुफ़्तगु की ख़बर है। इसलिए ख़ुदा की क़सम! अल्लाह तआला के सिवा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को और कोई उसकी ख़बर नहीं दे सकता।

अतः प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने इस्लाम की तरफ़ हमारी राहनुमाई और हिदायत फ़रमाई और मुझे इस राह पर चलने की तौफ़ीक़ बख़शी। इसके बाद उमेर ने कलिमा शहादत पढ़ा। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया अपने भाई को दीन की तालीम दो और उस को क़ु-रान-ए-पाक पढ़ाओ और उस के क़ैदी को रिहा कर दो। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़ौरन ही हुक्म की तामील की।

फिर हज़रत उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं हर वक़त अल्लाह के नूर को बुझाने की कोशिश में लगा रहता था और जो लोग अल्लाह के दीन को क़बूल कर चुके थे उनको ज़बरदस्त तकलीफ़ें पहुंचाया करता था। अतः अब मैं पसंद करता हूँ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझे मक्का जाने की इजाज़त दें ताकि वहां मक्के वालों को अल्लाह की तरफ़ बुलाऊँ और इस्लाम की दावत दूं। संभव है अल्लाह तआला उनको हिदायत अता फ़र्मा दे अन्यथा फिर मैं इन लोगों को उनकी बुतपरस्ती के आधार पर इसी तरह तकलीफ़ें पहुंचाऊंगा जैसे मैं इस्लाम की वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को तकलीफ़ें पहुँचाता रहा हूँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस को मक्का जाने की इजाज़त अता फ़र्मा दी। तकलीफ़ें पहुंचाने के लिए नहीं बल्कि तब्लीग़ के लिए। इसलिए वे मक्के वापस पहुंच गए और उनके बेटे वह्ब बिन उमेर भी मुस्लमान हो गए।

उधर उमेर के मक्के से रवाना होने के बाद सफ़वान लोगों से कहा करता था कि मैं तुम्हें एक ऐसे वाक़े की ख़ुशख़बरी सुनाता हूँ जो अनक़रीब रौनुमा होने वाला है और

शेष पृष्ठ 08 पर

ख़ुत्बः जुमअः

प्रथम तो अस्मा और अबू अफ़क़ यहूदी के क़तल के वाक़ियात रिवायतन और दिरायतन दरुस्त साबित ही नहीं होते और अगर बिल्फ़र्ज़ इन्हें दरुस्त समझा भी जावे तो वे इस ज़माना के हालात के अधीन क़ाबिल एतराज़ नहीं समझे जा सकते

अस्मा और अबू अफ़क़ यहूदी के क़तल का वर्णन किसी हदीस में नहीं पाया जाना बल्कि इबतेदाई इतिहासकार में से बाअज़ इतिहासकार का भी इस के मुताल्लिक़ ख़ामोश होना इस बात को क़रीबन क़रीबन यक़ीनी तौर पर ज़ाहिर करता है कि यह क़िस्से बनावटी हैं और किसी तरह बाअज़ रिवायतों में राह पाकर तारीख़ का हिस्सा बन गए हैं

जिस जिहत से भी देखा जाए यह किस्से सही साबित नहीं होते और ऐसा मालूम होता है कि या तो किसी मख़फ़ी दुश्मन इस्लाम ने किसी मुस्लमान की तरफ़ मंसूब करके ये क़िस्से वर्णन कर दिए थे और फिर वे मुस्लमानों की रिवायतों में दख़ल पा गए और या किसी कमज़ोर मुस्लमान ने अपने क़बीला की तरफ़ यह झूठा फ़ख़र मंसूब करने के लिए कि उससे ताल्लुक़ रखने वाले आदमियों ने बाअज़ मूज़ी काफ़िरों को क़तल किया था ये रिवायतें तारीख़ में दाख़िल कर दीं अल्लाह अधिक जनता है

यह अल्लाह तआला का शुक्र और एहसान है कि हमें उसने ज़माने के ईमाम को मानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और प्रत्येक बात को हम देखकर, जांच कर और उस की हक़ीक़त को समझ कर फिर वर्णन करने की कोशिश करते हैं

और कोई भी इल्ज़ाम इस किस्म का जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ात पर आता हो उसको रद्द करने की कोशिश करते हैं व्यंग्यात्मक कविताओं के द्वारा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़तल पर उकसाने वाले दुश्मन-ए-इस्लाम अबू अफ़क़ यहूदी के क़तल के वाक़ियात का विश्लेषणात्मक वर्णन

प्रोफ़ैसर डाक्टर नासिर अहमद ख़ान साहब पसिद्ध यौगिक में प्रयुक्त आफ़ कैनेडा, श्रीमान शरीफ़ अहमद भट्टी साहिब आफ़ रब्वाह, प्रोफ़ैसर अब्दुल क़ादिर डाहरी साहिब साबिक़ अमीर जमात ज़िला नवाबशाह और प्रोफ़ैसर डाक्टर मुहम्मद शरीफ़ ख़ान साहब आफ़ अमरीका का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 06 अक्टूबर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अस्मा के क़तल का वाक़िया जो पिछले ख़ुत्बे में वर्णन किया था और मैंने कहा था कि इसी तरह का एक दूसरा वाक़िया भी है। दूसरा वाक़िया भी महिज़ एक मन घड़त कहानी लगती है। यह दूसरा वाक़िया अबू अफ़क़ यहूदी का क़तल है। यहां लिखा है कि सीरत की कुतुब में एक और फ़र्ज़ी वाक़िया अबू अफ़क़ यहूदी के क़तल का वर्णन किया जाता है। इस की तफ़सील इस तरह है जो वर्णन की जाती है कि एक रोज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया। कौन है जो मेरे लिए इस ख़बीस अर्थात अबू अफ़क़ से निपट सकता है? अर्थात कौन है जो उस का काम समस्त कर सकता है उस को मार सकता है? ये शख़्स अर्थात अबू अफ़क़ बहुत ज़्यादा बूढ़ा आदमी था यहां तक कि कहा जाता है उस की उम्र एक सौ बीस बरस हो चुकी थी परंतु यह शख़्स लोगों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ भड़काया करता था और अपने शेरों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ बदज़बानी और गुस्ताख़ी किया करता था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस इरशाद पर हज़रत सालिम बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो उठे। यह उन लोगों में से थे जो अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से बेहद रोया करते थे। यह ग़ज़व-ए-बदर में भी शरीक हुए थे। ग़रज़ उन्होंने अर्ज़ किया मुझ पर नज़र अर्थात मिन्नत है कि मैं या तो अबू अफ़क़ को क़तल कर डालूँगा और या उस कोशिश में अपनी जान दे दूँगा। इसलिए उसके बाद हज़रत सालिम बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो मौक़ा की तलाश में रहने लगे। एक रोज़ जबकि रात का समय था और शदीद गर्मी थी तो अबू अफ़क़ अपने घर के सेहन में सोया जो उसके मकान के बाहर था। हज़रत सालिम रज़ियल्लाहु अन्हो को उस की इत्तिला हुई तो वह फ़ौरन रवाना हुए। वहां पहुंच कर हज़रत सालिम रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी तलवार अबू अफ़क़ के जिगर पर रखी और इस पर पूरा दबाओ डाल दिया यहां तक कि तलवार उस के पेट में पार हो कर बिस्तर में बंध गई और साथ ही ख़ुदा के दुश्मन अबू अफ़क़ ने एक भयानक चीख़ मारी। हज़रत सालिम रज़ियल्लाहु अन्हो उस को इसी हालत में छोड़कर वहां से चले आए। अबू अफ़क़ की चीख़ सुनकर फ़ौरन ही लोग दौड़ पड़े और उस के कुछ साथी उसी समय उसे उठा कर मकान के अंदर ले गए परंतु वह ख़ुदा का दुश्मन उस भयानक ज़ख़्म की ताब न ला कर मर गया।

(अल् सीरतुल हल् बिया भाग 3 पृष्ठ 300 दारुल मारूफ़ बेरूत 2012 ई.)

एक सीरत की किताब में यह वाक़िया इस तरह लिखा गया है।

लेकिन यह वाक़िया भी किसी मोतबर सनद से मर्वी नहीं है। सहा सित्ता में भी यह वर्णन नहीं।

सीरत की कुछ किताबों में इस वाक़िया का वर्णन मौजूद है जैसे सीरत अल् हल्बिया, शरह जरक़ानी, तबक़ातुल कुबरा लेइब्ने साद, सीरत नब्विया सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लेइब्ने हशाम, अल्बदाया वाल् नहाया, किताब अल्मग़ाज़ी लिल्वाकदी और सब्लुल् हुदा वल् रिशाद इत्यादि में लेकिन तारीख़ की अक्सर कुतुब में यह वाक़िया दर्ज नहीं है। उदाहरणतः अल् कामिल फिल तारीख, तारीख़ तिब्री, तारीख़ इब्ने ख़ुलदून इत्यादि जबकि तारीख़ की बाअज़ कुतुब जैसा पहले वर्णन हुआ है उदाहरणतः तारीख़ अल्ख़मीस में यह वाक़िया दर्ज है।

इस वाक़िया के मुताल्लिक़ भी वाक़िया अस्मा की तरह यह शहादत वर्णन की जाती है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अदावत और दुश्मनी में लोगों को उभारा करता था। जंग-ए-बदर के बाद यह बुग़ज़-ओ-हसद में मज़ीद बढ़ गया और खुल्लम खुल्ला बाग़ी हो गया।

क़तल अबू अफ़क़ वाली रिवायत के अंदरूनी झगड़े भी इस घटना को मुश्तबा कर देते हैं उदाहरणतः नंबर एक क़ातिल में इख़्तिलाफ़। इबन-ए-साद और वाक़दी

के नज़दीक अबू अफ़क़ के क़ातिल सालिम बिन अमीर थे जबकि बाअज़ दीगर रिवायात में सालिम बिन उमर का वर्णन है जबकि इब्ने अक़बा के नज़दीक सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन साबित अंसारी ने उसे क़तल किया। दूसरे यह कि क़तल के सबब में इख़तेलाफ़ है। इब्ने हशाम और वाक़दी के नज़दीक सालिम ने ख़ुद जोश में आकर उसे क़तल किया जबकि बाअज़ रिवायात के मुताबिक़ रसूलुल्लाह सल्लल्ला-ह ोअलैहि व सल्लम के हुक्म पर उसे क़तल किया गया।

(शरह जरक़ानी भाग 2 पृष्ठ 347 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

(अल्सीतुल नब्वी लेइब्ने हशशाम पृष्ठ 887 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

(किताब अल् मग़ाज़ी लिल्वाकदी भाग 1 पृष्ठ 163 दारुल कुतुब इल्मिया 2013 ई.)

(सिब्लुल् हुदा वल् रिशाद फ़ी सेर ख़ैरुल ईबाद भाग 6 पृष्ठ 23 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

इब्ने हशशाम ने इस तरह लिखा है। एक तीसरी बात मज़हब के इख़तेलाफ़ के बारे में है। इब्ने साद के नज़दीक अबू अफ़क़ यहूदी था जबकि वाक़दी के नज़दीक यह यहूदी नहीं था।

(अल् तबकातुल कुबरा लेइब्ने साद भाग 2 पृष्ठ 21 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

(किताब अल् मग़ाज़ी लिल्वाकदी भाग 1 पृष्ठ 163 दारुल कुतुब इल्मिया 2013 ई.)

फिर ज़माना क़तल में भी इख़तेलाफ़ है। वाक़दी और इब्ने साद के नज़दीक यह वाक़िया अस्मा बिंत मरवान के क़तल के बाद का वाक़िया है जबकि इब्ने असहाक़ और इब्ने हशशाम इत्यादि के नज़दीक यह वाक़िया अस्मा के क़तल से पहले का है।

(अल् तबकातुल् कुबरा ले इब्ने साद भाग 2 पृष्ठ 20 21 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

(किताब अल्मग़ाज़ी लिल्वाकदी भाग 1 पृष्ठ 161- 163 दारुल कुतुब इल्मिया 2013 ई.)

(अल् सीरतुल अल् नब्वी लेइब्ने हशशाम पृष्ठ 886-887 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

इन स्पष्ट इख़तेलाफ़ात से भी ज़ाहिर है कि यह महज़ बनावटी और जाली क़िस्सा है। इस की कोई हक़ीक़त नहीं। अगर बफ़रज़ महाल अबू अफ़क़ का क़तल होना मान भी लिया जाए तो उसके दीगर जरायम सरबराह ममलेकत को क़तल करने पर उकसाना, हजू और यह कह कर जंग पर उभारना, अमन ओ अमान को ख़तरे में डालना और जंग की आग भड़काना ही सज़ा-ए-मौत के लिए काफ़ी हैं जिन पर आजकल भी सज़ा-ए-मौत दी जाती है जब हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत साबित हो जाएगी। महिज़ गालियां देना इस क़तल की वजह नहीं हो उसी तरह अस्मा के वाक़िया की तरह यहां भी अबू अफ़क़ के क़तल के बाद यहूद का कोई रद्देअमल साबित नहीं है।

इस के क़तल पर यहूद का कोई रद्दे अमल होना चाहिए था लेकिन कोई रद्दे अमल साबित नहीं है। अतः उनका ख़ामोश रहना इस वाक़े के फ़र्ज़ी होने पर दलील-ए--कातेआ है। यह बात भी याद रखने के लायक़ है कि इन वाक़ियात का ज़माना जंग-ए-बदर से क़बल या तुरंत बाद का वर्णन किया जाता है कि फ़ौरी पहले हुआ है या पहले था या फ़ौरी तौर पर हुआ और जुमला इतिहासकार का इत्तिफ़ाक़ है कि मुस्लमानों और यहूदियों की पहली मुख़ासमत ग़ज़व-ए-बनू क़ेनुक़ाअ है। अगर बदर से पहले भी कोई वाक़िया होता तो उस के ज़ेल में ज़रूर वर्णन करते कि इस तरह यह वाक़िया हुआ है और यहूद अबू अफ़क़ और अस्मा के क़तल के वाक़ियात की बिना पर बजा तौर पर मुस्लमानों पर यह एतराज़ कर सकते थे कि मुस्लमानों ने अमली छेड़-छाड़ में उनसे पहल की है लेकिन कहीं यह वर्णन नहीं मिलता कि मदीने के यहूद ने इन वाक़ियात को लेकर कभी कोई ऐसा सवाल उठाया हो।

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अस्मा और अबू अफ़क़ के क़तल के फ़र्ज़ी वाक़ियात का वर्णन करते हुए सीरत ख़ातमन नबि-य्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में जो वर्णन फ़रमाया है वह इस तरह है कि :

"जंग-ए-बदर के हालात के बाद वाक़दी और बाअज़ दूसरे इतिहासकार ने दो ऐसे वाक़ियात दर्ज किए हैं जिनका कुतुब-ए-हदीस और सही तारीख़ी रिवायात में निशान नहीं मिलता और दिरायत भी ग़ौर किया जाए तो वह दरुस्त नहीं होते।

परंतु चूँकि उनसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व स ल्लम के ख़िलाफ़ एक ज़ाहिरी सूरत एतराज़ की पैदा हो जाती है इस लिए बाअज़ ईसाई इतिहासकार ने हसब-ए-आदत निहायत नागवार सूरत में उनका वर्णन किया है। यह फ़र्ज़ी वाक़ियात इस प्रकार वर्णन किए गए हैं कि मदीना में एक औरत अस्मा नामी रहती थी' अस्मा का दुबारा यहां वर्णन आ रहा है। "जो इस्लाम की सख़्त दुश्मन थी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ बहुत ज़हर उगलती रहती थी और अपने भड़काने वाले अशआर में लोगों को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ बहुत उकसाती थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़तल पर उभारती थी। आख़िर एक नाबीना सहाबी उमेर बन अदि रज़ियल्लाहु अन्हु ने इश्ति-आल में आकर रात के समय उस के घर में जबकि वह सोई हुई थी उसे क़तल कर दिया और जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस वाक़िया की इत्तिला हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस सहाबी को मलामत नहीं फ़रमाई बल्कि एक गोना उसके फ़ेअल की की।" यह वर्णन किया जाता है कि फ़ेअल की तारीफ़ की। इस का यह अर्थ नहीं कि हक़ीक़त में की। यह वाक़िया है जो वर्णन किया जाता है जिसका ग़लत होना पहले मैं साबित कर चुका हूँ। "दूसरा वाक़िया यह वर्णन किया गया है कि एक बूढ्ढा यहूदी अबू उफ़क़ नामी मदीना में रहता था। यहभ ी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ इश्तिआल अंगेज़ शेअर कहता था और कुफ़्फ़ार को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ जंग करने और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़तल कर देने के लिए उभारता था। आख़िर एक दिन उसे भी एक सहाबी सालिम बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ग़ुस्सा में आकर रात के समय उसके सेहन में क़तल कर दिया।" यह वर्णन किया जाता है।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि "वाक़दी और इब्ने हशशाम ने बाअज़ वे इश्तिआल अंगेज़ अशआर भी नक़ल किए हैं जो अस्मा और अबू अफ़क़ ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ कहे थे। इन दो वाक़ियात को सर विलियम मियोर इत्यादि ने निहायत नागवार सूरत में अपनी किताबों की ज़ीनत बनाया है यह जो मुस्तश्रिक़ीन हैं उन्होंने उनको ले के बहाना बनाया कि देखो कितने ज़ुलम हुए। "मगर हक़ीक़त यह है कि बहस और तन्क़ीद के सामने ये वाक़ियात दरुस्त साबित ही नहीं होते।

पहली दलील जो उनकी सेहत के मुताल्लिक़ शुबा पैदा करती है यह है कि कुतुब अहादीस में इन वाक़ियात का वर्णन नहीं पाया जाता। अर्थात किसी हदीस में क़ातिल या मक़्तूल का नाम लेकर इस किस्म का कोई वाक़िया वर्णन नहीं किया गया। बल्कि हदीस तो अलग रही कुछ इतिहासकार ने भी उनका वर्णन नहीं किया हालाँकि अगर इस किस्म के वाक़ियात वाक़ई हुए होते तो कोई वजह नहीं थी कि कुतुब हदीस और कुछ कुतुब तारीख़ उनके वर्णन से ख़ाली होतीं। इस जगह यह संदेह नहीं किया जा सकता कि चूँकि इन वाक़ियात से बज़ाहिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़ एक गोना एतराज़ वारिद होता था इस लिए मुहद्देसीन और कुछ इतिहासकार ने उनका वर्णन तर्क कर दिया होगा, क्योंकि अव्वल तो यह वाक़ियात इन हालात को मद नज़र रखते हुए जिनमें वह अवतरित हुए क़ाबिल एतराज़ हैं।" अगर देखा भी जाए कि इस तरह इश्तिआल कर रहा है, हुकूमत के ख़िलाफ़ भड़का रहा है, तो अगर हुए भी तो क़ाबिल एतराज़ नहीं थे। इसलिए यह कहना ग़लत है कि जी इतिहासकार ने इसलिए या हदीस में इसलिए वर्णन नहीं आया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर एतराज़ आता था। "दूसरे जो शख़्स हदीस-ओ-तारीख़ का मामूली ज्ञान भी रखता है उस से ये बात मख़फ़ी नहीं हो सकती कि : मुस्लमान मुहद्देसीन और इतिहासकार ने कभी किसी रिवायत के वर्णन को महिज़ इस बिना पर तर्क नहीं किया कि इस से इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक पर बज़ाहिर एतराज़ होता है।

जिसकी वजह यह है कि उनका साबित तरीक़ था कि जिस बात को भी वे अज़रूए रिवायत सही पाते थे उसे नक़ल करने में वे उसके मज़मून की वजह से क़तअन कोई देरी नहीं करते थे बल्कि उनमें से कुछ मुहद्देसीन और अक्सर इतिहासकार का तो यह तरीक़ था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के मुताल्लिक़ जो बात भी उन्हें पहुँचती थी ख़ाह वह रिवायत-ओ-दिराएत दोनों लिहाज़ से कमज़ोर और नाक़ाबिल-ए-एतेमाद हो वे उसे दियानतदारी के साथ अपने ज़ख़ीरा में जगह दे देते थे और इस बात का फ़ैसला मुज्तहिद उल्मा पर या बाद में आने वाले शोधकर्ताओं पर छोड़ देते थे कि वे उसूल रिवायत-ओ-दराएत के मुताबिक़ सही और स्कीम का ख़ुद फ़ैसला कर लें और ऐसा करने में उनकी नीयत यह होती थी कि कोई बात जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ मंसूब होती है ख़ाह वह दरुस्त नज़र आए या ग़लत वह जमा होने से

न रह जाए। यही कारण है कि तारीख़ की इबतेदाई किताबों में प्रत्येक किस्म के रतब-ओ-याबिस का ज़ख़ीरा जमा हो गया है परंतु उसके ये माने नहीं हैं कि वे सब काबिल-ए-क़बूल हैं बल्कि अब यह हमारा काम है कि उनमें से कमज़ोर को मज़बूत से जुदा कर दें।

बहरहाल इस बात में ज़र्रा भर भी गुंजाइश नहीं कि किसी मुस्लमान मुहद्दिस या मुर्ख़ ने कभी किसी रिवायत को महिज़ इस बिना पर रद्द नहीं किया कि वह बज़ाहिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम या सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की शान के ख़िलाफ़ है या यह कि इस की वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम या इस्लाम पर कोई एतराज़ वारिद होता है। इसलिए काब बिन अशर्फ़ और अब्बू राफ़े यहूदी के क़तल के वाक़ियात जो अस्मा और अबू अफ़क़ के मज़ऊमा वाक़ियात से बिल्कुल मिलते-जुलते हैं

.. हदीस-ओ-तारीख़ की समस्त किताबों में पूरी पूरी सराहत और तफ़सील के साथ वर्णन हुए हैं और किसी मुस्लमान रावी या मुहद्दिस या इतिहासकार ने उनके वर्णन को तर्क नहीं किया अंदर के हालात अस्मा और अबू अफ़क़ यहूदी के क़तल का वर्णन किसी हदीस में न पाया जाना बल्कि इबतेदाई इतिहासकार में से कुछ इतिहासकार का भी इस के विषय में ख़ामोश होना इस बात को क़रीबन क़रीबन यक़ीनी तौर पर ज़ाहिर करता है कि ये किसे बनावटी हैं और किसी तरह बाअज़ रिवायतों में राह पाकर तारीख़ का हिस्सा बन गया गए हैं।

फिर अगर इन किस्सों की तफ़सीलात का मुताला किया जाए तो उनका बनावटी होना और भी यक़ीनी हो जाता है। उदाहरणतः अस्मा के क़िस्सा में इब्न-ए-साद इत्यादि की रिवायत में क़ातिल का नाम उमेर बिन अदी वर्णन किया गया है, लेकिन इस के मुक़ाबले में इब्ने दुरेद की रिवायत में क़ातिल का नाम उमेर बिन अदी नहीं बल्कि ग़िश्मीर है। सुहेली इन दोनों नामों को ग़लत क़रार देकर यह कहता है कि दरअसल अस्मा को उस के पति ने क़तल किया था जिसका नाम रिवायतों में यज़ीद बिन ज़ैद वर्णन हुआ है। और फिर बाअज़ रिवायतों में यह आता है कि ऊपर वर्णित लोगों में से कोई भी अस्मा का क़ातिल नहीं था बल्कि उस का क़ातिल एक नामालूम अज्ञात शख़्स था जो उसी की क़ौम में से था। मक़्तूला का नाम इब्न-ए-साद इत्यादि ने अस्मा बिंत मरवान वर्णन किया है, लेकिन अल्लामा इब्ने अब्दुल बरा का यह कथन है कि वह अस्मा बिंत मरवान नहीं थी बल्कि दरअसल उमेर ने अपनी बहन बिंत-ए-अदी को क़तल किया था। क़तल का समय इब्न-ए-साद ने रात का दरमयानी हिस्सा लिखा है लेकिन जरक़ानी की रिवायत से दिन या ज़्यादा से ज़्यादा रात का आरंभिक हिस्सा साबित होता है क्योंकि इस में यह वर्णन किया गया है कि मक़्तूला उस समय खजूरें बेच रही थी।' यह सारी तफ़सील मैं पहले भी वर्णन कर चुका हूँ।

फिर "दूसरा वाक़िया' जिसका अब वर्णन हो रहा है वह "अबू अफ़क़ के क़तल का है। इस में इब्न-ए-साद और वाक़दी इत्यादि ने क़ातिल का नाम सालिम बिन उमेर लिखा है लेकिन बाअज़ रिवायतों में इस का नाम सालिम बिन अम्र वर्णन हुआ है। और इब्न-ए-अक़बा ने सालिम बिन अब्दुल्लाह वर्णन किया है। इसी तरह अबू अफ़क़ मक़्तूल के मुताल्लिक़ इबन-ए-साद ने लिखा है कि वह यहूदी था लेकिन वाक़दी उसे यहूदी नहीं लिखता। फिर इब्न-ए-साद और वाक़दी दोनों से यह पता लगता है कि सालिम ने ख़ुद जोश में आकर अबू अफ़क़ को क़तल कर दिया था, लेकिन एक रिवायत में यह वर्णन किया गया है कि उसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिदायत से क़तल किया गया था। ज़माना क़तल के मुताल्लिक़ भी इबन-ए-साद और वाक़दी उसे अस्मा के क़तल के बाद रखते हैं लेकिन इब्न-ए-इसहाक़ और अबू अल् राबे उसे अस्मा के क़तल से पहले वर्णन करते हैं। यह जुमला इख़तेलाफ़ात इस बात के मुताल्लिक़ मज़बूत संदेह पैदा करते हैं कि यह क़िस्से जाली और बनावटी हैं या अगर उनमें कोई हक़ीक़त है तो वह ऐसी मस्तूर है' छिपी हुई है "कि नहीं कह सकते कि वह किया है और किस नौईयत की है।

एक और दलील इन वाक़ियात के ग़लत होने की यह है कि इन दोनों किस्सों का ज़माना वह वर्णन किया गया है जिस के विषय जुमला इतिहासकार का इत्तिफ़ाक़ है कि इस समय तक अभी मुस्लमानों और यहूदियों के मध्य कोई झगड़ा या तनाज़ा रौनुमा नहीं हुआ था। इसलिए तारीख़ में ग़ज़वा बनी क़ेनक़ाअ के विषय में यह बात मुस्लिम तौर पर वर्णन हुई है कि मुस्लमानों और यहूदियों के दरमयान यह पहली लड़ाई थी जो वक़ूअ में आई और यह कि बनू क़ेनक़ाअ वह पहले यहूदी थे जिन्हों ने इस्लाम की अदावत में अमली कारवाई की। अतः यह किस तरह क़बूल किया जा सकता है कि इस ग़ज़वा से पहले यहूदियों और मुस्लमानों के दरमयान इस किस्म का किशत-ओ-ख़ून हो चुका था और फिर अगर ग़ज़वा बनू क़ेनक़ाअ से क़बल ऐसे वाक़ियात हो चुके थे तो यह नामुमकिन था कि इस ग़ज़वा के बवाअस इत्यादि के वर्णन में इन वाक़ियात का वर्णन नहीं आता।' जब ग़ज़वे की वजूहात वर्णन की गईं तो उन वाक़ियात का वर्णन न आता। लिखा जाना चाहिए था कि इस तरह हमारे ये दो क़तल भी हुए। "कम से कम इतना तो ज़रूरी था कि यहूदी लोग जो इन वाक़ियात का आधार पर मुस्लमानों के ख़िलाफ़ एक ज़ाहेरी रंग एतराज़ का पैदा कर सकते थे कि उन्होंने उनके साथ अमली छेड़-छाड़ करने में पहल की है इन वाक़ियात के मुताल्लिक़ वावेला करते। अगर किसी तारीख़ में यहाँ तक कि ख़ुद उन इतिहासकार की कुतुब में भी जिन्हों ने ये क़िस्से रिवायत किए हैं क़तअन यह वर्णन नहीं आता कि मदीना के यहूद ने कभी कोई ऐसा एतराज़ किया हो और अगर किसी शख़्स को यह ख़्याल पैदा हो कि शायद उन्होंने एतराज़ उठाया हो परंतु मुस्लमान इतिहासकार ने इस का वर्णन नहीं किया हो तो यह एक ग़लत और बे-बुनियाद ख़्याल होगा क्योंकि जैसा कि वर्णन किया जा चुका है कभी किसी मुस्लमान मुहद्दिस या मुर्ख़ ने मुख़ालेफ़ीन के किसी एतराज़ पर पर्दा नहीं डाला। इसलिए उदाहरणतः जब सरिया नख़ला वाले क़िस्सा में मुशरेकीन-ए-मक्का ने मुस्लमानों के ख़िलाफ़ अश्हर हर्म के खिलाफ़ बे-हुरमती का इल्ज़ाम लगाया तो मुस्लमान इतिहासकार ने कमाल दियानतदारी से उनके इस एतराज़ को अपनी किताबों में दर्ज कर दिया। अतः अगर इस अवसर पर भी यहूद की तरफ़ से कोई एतराज़ हुआ होता तो तारीख़ उसके वर्णन से ख़ाली नहीं होती। अल-ग़र्ज़ जिस जत से भी देखा जाए यह किस्से सही साबित नहीं होते और ऐसा मालूम होता है कि या तो किसी मख़फ़ी दुश्मन इस्लाम ने किसी मुस्लमान की तरफ़ मंसूब कर के यह क़िस्से वर्णन कर दिए थे और फिर वे मुस्लमानों की रिवायतों में दख़ल पा गए और या किसी कमज़ोर मुस्लमान ने अपने क़बीला की तरफ़ यह झूठा फ़ख़र मंसूब करने के लिए कि इस से ताल्लुक़ रखने वाले आदमियों ने कुछ उपद्रवी काफ़िरों को क़तल किया था यह रिवायतें तारीख़ में दाख़िल कर दें। अल्लाह उचित जानता है।

यह तो वह असल हक़ीक़त है जो इन वाक़ियात की मालूम होती है, लेकिन जैसा कि "पहले ".. इशारा किया है अगर ये वाक़ियात दरुस्त भी हों तो फिर भी इन हालात को देखते हुए जिनके मातहत वे अवतरित पज़ीर हुए वे काबिल एतराज़ नहीं समझे जा सकते। इन दिनों में जो नाज़ुक हालत मुस्लमानों के थे उसका वर्णन .. किया जा चुका है। उनका हाल ठीक उस शख़्स की तरह हो रहा था जो एक ऐसी जगह में घिर जाए जिसके चारों तरफ़ दूर-दूर तक ख़तरनाक आग शोला-ज़न हो और इसके लिए कोई रास्ता बाहर निकलने का न हो और फिर उसके पास भी वे लोग खड़े हों जो उस के जानी दुश्मन हैं। मुस्लमानों की ऐसी नाज़ुक हालत में अगर कोई शरीर और फ़ित्ना परदाज़ शख़्स उनके आक़ा और सरदार के ख़िलाफ़ इश्तिआल अंगेज़ शेअर कह कह कर लोगों को इसके ख़िलाफ़ उकसाता और इसके क़तल पर दुश्मनों को उभारता था, तो इस ज़माना के हालात के मातहत उसका ईलाज सिवाए इसके और क्या हो सकता था कि ऐसे शख़्स को क़तल कर दिया जाता और फिर यह क़तल भी मुस्लमानों की तरफ़ से इंतेहाई इश्तिआल की हालत में हुआ। जिस हालत में कि मामूली क़तल भी क़िसास के काबिल नहीं समझा जाता। इसलिए मिस्टर मार्गो लैस जैसा शख़्स' यह भी orientalist है। "जो उदाहरणतः प्रत्येक अमर में मुख़ालेफ़ाना पहलू लेता है इन वाक़ियात की वजह से मुस्लमानों को काबिल-ए-मलामत नहीं क़रार देता। इसलिए मिस्टर मार्गो लैस लिखते हैं :

"चूँकि अस्मा ने अपने अशआर में अगर वे उसकी तरफ़ सही तौर पर मंसूब किए गए हैं मुहम्मद (ल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के क़तल पर उनके दुश्मनों को वास्तव में उभारा था। इसलिए उसका क़तल ख़ाह उसे दुनिया के किसी मयार के मुताबिक़ ही जज किया जाए एक बे-बुनियाद और ज़ालिमाना फ़ेअल नहीं समझा जा सकता। और फिर यह बात भी याद रखनी चाहिए कि इश्तिआल अंगेज़ी का वह तरीक़ जो हजू के अशआर की सूरत में इख़तेयार किया गया वे अरब जैसे मुल्क में दूसरे देशों की निसबत बहुत ज़्यादा ख़तरनाक नतायज पैदा कर सकता था ..और यह बात कि केवल मुजरिमों को ही क़तल किया गया अरब के प्रचलित समय के दस्तूर पर एक बहुत बड़ी इस्लाह थी क्योंकि केवल जो मुजरिम था उसको क़तल किया गया है बाक़ी लोगों को क़तल नहीं किया। क्योंकि "अरबों में इश्तिआल अंगेज़ अशआर की वजह से केवल अफ़राद तक मुआमला महिदूद नहीं रहता था बल्कि सालिम के सालिम क़बायल में ख़तरनाक जंग की आग मुश्तइल हो जाया करती थी। इसकी जगह इस्लाम में यह सही उसूल क़ायम किया गया कि जुर्म की सज़ा सिर्फ़ मुजरिम को होनी चाहिए न कि उस के अज़ीज़ो अक़ारिब को भी।"

मिस्टर मार्गो लैस को अगर इन क़त्लों के मुताल्लिक़ कोई एतराज़ है, तो इस तरीक़ की वजह से है जो इख़तेयार किया गया अर्थात यह कि क्यों न उनके जुर्म का बाक़ायदा ऐलान करके उन्हें बाज़ाबता तौर पर क़तल की सज़ा दी गई। सो उसका

पहला उत्तर तो यह है कि अगर इन वाक़ियात को दरुस्त भी समझा जाए तो वह बाअज़ मुस्लमानों के महज़ इन्फ़िरादी फ़ेअल थे जो उनसे सख़्त इश्तिआल की हालत में सरज़द हुए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनका हुक्म नहीं दिया था जैसा कि इब्ने साद के वर्णन से यक़ीनी तौर पर पाया जाता है। दूसरे अगर बिलफ़र्ज़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का हुक्म ही समझा जाए तो फिर भी यक़ीनन इस ज़माना के हालात ऐसे थे कि अगर अस्मा और अबू अफ़क़ के क़तल के विषय में बाक़ायदा तौर पर ज़ाबता का तरीक़ इख़्तेयार किया जाता और मक़्तूलीन के परिजनों को पेश अज़ समय इत्तिला हो जाती कि हमारे आदमी क़तल किए जाऐंगे तो उसके नतायज बहुत ख़तरनाक हो सकते थे और इस बात का सख़्त अंदेशा था कि यह वाक़ियात मुस्लमानों और यहूदियों और तथा मुस्लमानों और मुशरेकीन मदीना के मध्य एक वसीअ जंग की आग भड़का देते।" हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि "ताज्जुब है कि मिस्टर मार्गो लैस ने जहां महिज़ क़तल के फ़ेअल को अरब के विशेष हालात के मातहत जायज़ क़रार दिया है वहां तरीक़ा क़तल के मुताल्लिक़ उनकी नज़र उस ज़माना के मख़सूस हालात तक क्यों नहीं पहुंची। अगर वे इस पहलू में भी इस समय के हालात को मद्द-ए-नज़र रखते तो ग़ालिबन उन्हें यक़ीन हो जाता कि जो तरीक़ इख़्तेयार किया गया' अगर यह सही है कि क़तल किया गया था। "वही उस समय के हालात और अमन-ए-आम्मा के मुफ़ाद के लिए मुनासिब और ज़रूरी था" लेकिन अमलन तो हुआ ही नहीं।

...ख़ुलासा कलाम यह कि प्रथम तो अस्मा और अबू अफ़क़ यहूदी के क़तल के वाक़ियात रिवायतन और दिरायतन दरुस्त साबित ही नहीं होते और अगर बिल्फ़र्ज़ इन्हें दरुस्त समझा भी जाए तो वह इस ज़माना के हालात के मातहत क़ाबिल एतराज़ नहीं समझे जा सकते।

और फिर यह कि जो भी सूरत हो या क़तल की घटना हो बहरहाल बाअज़ मुस्लमानों के इन्फ़रादी अफ़आल थे जो सख़्त इश्तिआल की हालत में उनसे सरज़द हुए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनके मुताल्लिक़ हुक्म नहीं दिया था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए पृष्ठ 446 से 451)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर यह इल्ज़ाम ही ग़लत है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि उनको क़तल करो। ये सब मन घड़त बातें हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ मंसूब की गई हैं। इन इतिहासकारों ने जो लिखा, बाद में चाहिए तो यह था कि इस का सही तरह तजज़िया किया जाता।

यह अल्लाह तआला का शुक्र और एहसान है कि हमें उसने ज़माने के इमाम को मानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और प्रत्येक बात को हम देखकर, परख कर और उस की हक़ीक़त को समझ कर फिर वर्णन करने की कोशिश करते हैं और कोई भी इल्ज़ाम इस किस्म का जो है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ात पर आता हो उस को रद्द करने की कोशिश करते हैं।

अल्लाह तआला इन उल्मा को भी अक़्ल दे जो इन बातों को रायज करके केवल अपने मुफ़ादात हासिल करते हैं और इस्लाम को बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। कहने को तो एक तरफ़ वह इस्लाम की ख़िदमत कर रहे हैं लेकिन हक़ीक़त में उनके अमल ही हैं जिन्होंने उनमें शिद्दत पसंदी पैदा कर दी है। अल्लाह तआला उनको भी अक़्ल अता फ़रमाए :

इस समय मैं कुछ मरहूमीन का वर्णन भी करूँगा जिसमें से पहला वर्णन है :

प्रोफ़ैसर डाक्टर नासिर अहमद ख़ान साहब जो परवेज़ परवाज़ी साहिब के नाम से मशहूर थे पिछले दिनों कैनेडा में सतासी वर्ष की आयु में इंतेक़ाल फ़र्मा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

आप कादियान में पैदा हुए थे। उनके पिता मौलाना अहमद ख़ान साहब नसीम मुबल्लिग सिलसिला थे। फिर बड़ा लंबा अरसा ऐडीशनल नाज़िर इस्लाह-ओ-इरशाद स्थानिय रहे और वह भी बड़े दबंग किस्म के आदमी थे। जमाअतों को उन्होंने बड़ा आर्गेनाईज़ किया। उनकी वालिदा रहमत बी-बी थीं। परवाज़ी साहिब ने कादियान में इबतेदाई तालीम हासिल की। फिर मैट्रिक के बाद उन्होंने कॉलेज में दाख़िला नहीं लिया क्योंकि तालीमुल इस्लाम कॉलेज उस समय लाहौर में होता था। फिर जब कॉलेज रब्वाह में शिफ़्ट हुआ तो उन्होंने वहां कॉलेज में लिया। 1958 ई. में बी ए ऑनर्ज़ की डिग्री हासिल की। 1960 ई. में यूनीवर्सिटी औरेइंटेल कॉलेज से एम.ए किया और 68 ई. में पंजाब यूनीवर्सिटी से पी एच डी की डिग्री हासिल की। प्रोफ़ैसर नासिर परवाज़ी साहिब 1960 ई. में उर्दू में एम.ए करने के बाद लेक्चरर निर्धारित हुए और तदरीस का आग़ाज़ उन्होंने हुकूमत के गर्वनमैंट कॉलेज मुज़फ़्फ़र गढ़ से किया। फिर अदबी सरगर्मीयों में हिस्सा लेना शुरू किया। अल्फ़ज़ल में, माहनामा मिसबाह में, ख़ालिद इत्यादि में उनके मज़ामीन प्रकाशित होते थे। इसी तरह शेअर--ओ-शायरी से भी उनको ख़ास शग़फ़ था। अच्छे शेअर कहा करते थे। जब तालीमुल इस्लाम कॉलेज रब्वाह में बन गया तो वक़्फ़ करके 1961 ई. में यह वहां आ गए और 1969 ई. तक लेक्चरर के तौर पर काम किया। 1969 ई. से 75 ई. तक तालीमुल इस्लाम कॉलेज रब्वाह में उर्दू डिपार्टमैंट के हैड के तौर पर निर्धारित किए गए। 1975 ई. से 79 ई. तक ओसाका यूनीवर्सिटी आफ़ फ़ौरन स्टडीज़ (Osaka University of Foreign Studies) जापान में वज़ीटिनग प्रोफ़ैसर निर्धारित हुए जहां ख़िदमात के दौरान उन्होंने पाकिस्तान और जापान के बेहतरीन ताल्लुक़ात की बड़ी कोशिश की। टोकीयो में जमाअत के क़ियाम के सिलसिले में भी उन्होंने सहायता की। 1979 ई. में यह वापस आगए तो फिर कॉलेज कौमियाए जाने के बाद पाकिस्तान के मुख़्तलिफ़ कॉलिजों में यह अस्सिटैंट प्रोफ़ैसर के तौर पर पढ़ाते रहे। 86 ई. से 90 ई. तक यह बतौर अस्सिटैंट प्रोफ़ैसर गर्वनमैंट कॉलेज फैसलाबाद में पढ़ाया करते थे। अहमदी होने की वजह से इस दौर में बहुत ज़्यादा मुश्किलात का सामना करना पड़ा। अंततः जब नौबत गिरफ़्तारी तक पहुंच गई तो सब छोड़ छाड़ के यहां यू. के आ गए। हज़रत ख़लीफ़ा राबे रहमहुल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर हुए। फिर उनके हुक्म से स्वीडन हिज्रत की वहां 1991 ई. से 2001 ई. तक उपसाला यूनीवर्सिटी (Uppsala University) स्वीडन में प्रोफ़ैसर के तौर पर ख़िदमात अंजाम देते रहे। स्वीडन में क़ियाम के दौरान नोबेल प्राइज़ कमेटी फ़ार लिटरेचर के रुकन भी बने और सोला वर्ष ख़िदमात सरअंजाम देते रहे। 2003 ई. में कैनेडा हिज्रत कर गए। दुनिया अदब और तालीम के मैदान में आपका नाम काफ़ी मशहूर है। उनकी पत्नी अम्तुल मजीद साहिबा बिंत मौलवी मुहम्मद अहमद साहिब जलील हैं और अल्लाह तआला ने उनको दो बेटों और तीन बेटियों से नवाज़ा।

उनकी पत्नी कहती हैं कि तरेसठ वर्ष का हमारा साथ था। प्रत्येक ऊंच नीच, ख़ुशी ग़मी, आसानी और तंगी में उन्होंने ख़ूब साथ निभाया और क्योंकि मैं माता पिता की बड़ी पुत्री थी, रब्वाह में रही। उन्होंने भी, (प्रोफ़ैसर परवाज़ी साहिब ने भी) कभी मुझे उनकी ख़िदमत से नहीं रोका बल्कि मेरे से बढ़कर उनका ख़्याल रखा। कहती हैं उनका सुलूक मेरे सब रिश्ते दारों से अर्थात अपने ससुराली रिश्तेदारों से भी बहुत मिसाली था। ایتائے ذی القربیٰ की एक आला मिसाल थी। इंतेहाई मुहब्बत और इख़लास से रिश्तेदारों से पेश आया करते थे। उनकी प्रत्येक ख़ुशी ग़मी में शरीक होना उनके बेटे ताहिर अहमद ख़ान कहते हैं : किसी भी हाल में और हालत में चेहरे पर मुस्कुराहट ही होती थी। हमेशा ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से वालहाना मुहब्बत करते रहे और लिखा है कि अंतिम सांस तक मेरे से उनका संपर्क रहा और दुआ की दरख़ास्त करते रहे। पिछले दिनों शदीद बीमारी में भी जब डाक्टर जवाब दे चुके थे और उनसे हाथ से लिखना भी मुश्किल था पहले तो पैग़ाम भेजते रहे फिर बाअज़ दफ़ा बड़ी शिकस्ता तहरीर में अपने हाथ से अपने बिस्तर से लेटे लेटे ही दुआ का ख़त लिख के मुझे भिजवाया करते थे। बड़ा इख़लास-ओ-वफ़ा का ताल्लुक़ था। उनके बेटे लिखते हैं कि जापान में क़ियाम के दौरान माता साहिब को इन्साईक्लो पीडीया का इनाम मिला जो इस ज़माने में एक बड़ा इनाम होता था वह उन्होंने ख़िलाफ़त लाइब्रेरी को donate कर दिया। 1980 ई. की दहाई में अल्लामा इक़बाल गोल्ड मैडल फ़ार लिटरेचर से भी नवाज़ा गया लेकिन अहमदी होने की वजह से उनको बुलाया नहीं गया और उनका मैडल घर में भेज दिया गया।

उनकी पुत्री अंतुल वदूद कहती हैं मेरे माता को क़ुरआन-ए-करीम से इशक़ था। बिलानाग़ा रोज़ाना पूरे सीपारे की तिलावत करते थे और कहती हैं कभी मुझे किसी मज़मून या तक़रीर के लिए कोई हवाला चाहिए होता तो एक मिनट में बता देते कि अमुक सूरत की अमुक आयत में यह तलाश करो। कहती हैं कि हमारे पिता ने हमें ख़िलाफ़त से मुहब्बत सिखाई। confidence दिया कि अपने दिल की बात वर्णन कर सकूँ और समय के ख़लीफ़ा से ताल्लुक़ पैदा कर सकूँ।

उनकी दूसरी पुत्री सादिया कहती हैं मेरे पिता ख़िलाफ़त के शैदाई थे। हमेशा उनकी गुफ़्तगु में और व्यवहार में ख़िलाफ़त अहमदिया के लिए इंतेहाई दर्जे की मुहब्बत और अदब देखा। हमेशा देखते थे कि हमारे पिता प्रत्येक काम से पहले समय के ख़लीफ़ा को ख़त लिखते थे, दुआ की दरख़ास्त करते थे और बीमारी के आख़िरी अय्याम में भी जब डाक्टर ने आकर तशवीश का इज़हार किया, नाउम्मीदी की बातें कीं तो डाक्टर के उनके के कमरे से निकलते ही उन्होंने मुझे कहा कि पेन और काग़ज़ लाओ और कमज़ोर और काँपते हाथों से दुआ के लिए उन्होंने मुझे ख़त लिखा जैसा कि मैं पहले वर्णन कर चुका हूँ कि ख़त लिखते थे। सदक़ा बहुत देते थे। जितनी रक़म

होती सिर्फ़ सदक़ा में दे देते थे।

नाइला महमूद नवासी हैं। ज़फ़र महमूद उनके पिता हैं। कहती हैं मैंने अपने नाना के माध्यम से देखा और सीखा कि ईमान क्या है और अल्लाह तआला से सच्ची मुहब्बत कैसे नज़र आती है। कहती हैं मैं आपकी हालत और आख़िरी सांस तक मुसलसल शहादत वाली उंगली उठा उठा कर बार-बार अल्लाह तआला को दिल से अल्हमदो लिल्लाह अल्हम्दुलिल्ला कहने पर हैरान रह जाती थी कि आख़िरी समय में भी मुस्तक़िल अल्हम्दुलिल्ला पढ़ते रहे। कहती हैं उनकी मुहब्बत को देखकर मेरे दिल में एक शोला भड़का है कि अल्लाह तआला, क़ुरआन-ए-पाक और ख़िलाफ़त से जैसी मुहब्बत उन्हें थी वैसी मुझे भी मिल जाए। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके बच्चों और नसल को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफीक दे।

दूसरा जनाज़ा शरीफ़ अहमद साहिब भट्टी इब्ने अमीर ख़ान साहब भट्टी रब्वाह का है। उनकी भी पिछले दिनों अठासी वर्ष की आयु में वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम मूसी थे। उनके पीछे रहहने वालों में पत्नी के इलावा दो बेटे और दो बेटियां शामिल हैं। एक बेटे हिफ़ाज़त मर्कज़ में काम कर रहे हैं। दूसरे बेटे ताहिर अहमद भट्टी मुरब्बी सिलसिला सैरालियोन में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं।

उनके बेटे ताहिर भट्टी साहिब, जो मुरब्बी हैं लिखते हैं कि मेरे वालिद वर्णन करते थे कि जब पण्डित लेखराम के क़तल की भविष्यवाणी पूरी हुई तो उस समय उनके वालिद मुहतरम अमीर ख़ान साहब भट्टी छोटी उम्र के थे। उनके बाक़ौल इस भविष्यवाणी के पूरा होने से उनके दिल में अहमदियत की सदाक़त घर कर गई जबकि बाव्जाह छोटी उमरी कादियान जाने और बैअत करने से महरूम रहे और बाद में हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर बैअत करके सिलसिला अहमदिया में दाख़िल हुए।

1974 ई. में फूटने वाले फ़सादाद और मुख़ालेफ़ाना हालात के सबब, ये उस समय लालियां होते थे वहां से छोड़ के रब्वाह आ गए और वहीं आबाद हो गए। टेक्सटाइल मिल्ज़ में ये मुलाज़मत किया करते थे। कभी भी अपनी अहमदियत को नहीं छुपाया। जहां भी जाना होता पहले दिन ही लोगों को बता दिया करते थे कि मैं अहमदी हूँ। अगर मेरे से ताल्लुक़ रखना है तो रखो क्योंकि मैं तो अहमदी रह के ही अपनी शनाख़्त कराऊँगा।

उनके भाई लतीफ़ अहमद साहिब जर्मनी में हैं। कहते हैं टेक्सटाइल मिल में मुलाज़मत करते थे तो एक अहमदियत का दुश्मन उनके डिपार्टमैंट में आया और कहने लगा कि मुझे इलम हुआ है कि तुम अहमदी हो तो आपने कहा हूँ अहमदी। तो उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर गाली गलोच की। कहने लगा कि अब इस मिल में या तुम रहोगे या मैं। और उसने मिल मालिकान को भी फ़साद पर उकसाने की भरपूर कोशिश की। आप उसी वक़्त दुआ में लग गए कि या अल्लाह अपने मसीह मौऊद की ख़ातिर मदद कर और इस शरारत को नाकाम कर दे। कहते हैं कुछ देर बाद एक वर्कर ने आ के उनको बताया कि जो शख़्स आपसे बदतमीज़ी कर रहा था वह मिल के बाहर परेशान बैठा है और मिल के मालिकान ने एक सौदे में इस की बड़ी चोरी पकड़ी है और इस को मिल से फ़ारिग़ कर रहे है।

तहज्जुद गुज़ार, पंज वकता नमाज़ों के पाबंद और हमेशा दुआओं में मशग़ूल रहने वाले इन्सान थे। सिलसिले के लिटरेचर को बहुत पढ़ा करते थे और रिटायरमैंट के बाद तो और भी ज़्यादा पढ़ना शुरू कर दिया। हमेशा सिलसिले की कोई न कोई पुस्तक उनके सिरहाने मौजूद रहती थी और इस के मुताले में मशग़ूल रहते। और जब भी ख़ुलफ़ाए अहमदियत की तरफ़ से कोई दुआ की तहरीक होती तो उस में फ़ौरी तौर पर मशग़ूल हो जाते। दुरूद शरीफ़ बहुत ज़्यादा पढ़ा करते थे। उनके मुरब्बी बेटे कहते हैं कि जब मैं स्कूल में छट्टी जमाअत में था तो मुझे कहा करते थे कि स्कूल आते-जाते दुरूद शरीफ़ पढ़ा करो और उन्होंने, भट्टी साहिब ने अपना बताया कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मैं दिन में हज़ार से ज़ायद मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता हूँ। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफीक दे।

अगला वर्णन है प्रोफ़ैसर अब्दुल क़ादिर डाहरी साहिब का जो साबिक़ अमीर जमाअत ज़िला नवाबशाह के थे

बानवे वर्ष की उम्र में योह वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। एक बेटा और पाँच बेटियां उनकी हैं

उनके बेटे समर अहमद लिखते हैं कि ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके वालिद रईस मुहम्मद मुक़ीम ख़ान डाहरी साहिब मरहूम के द्वारा हुआ। अब्दुल क़ादिर साहिब बड़े दिलेर और सच्चे इन्सान थे। बेटे लिखते हैं कि मुआशरे में पिसे हुए तबक़ात के साथ बैठने उठने में कोई झिजक महसूस नहीं करते थे क्योंकि वहां तो रिवाज के मुताबिक़ बड़ा मायूब समझा जाता है कि किसी ग़रीब को बराबर में बिठाया जाए। यूनीवर्सिटी से सीधी लिटरेचर में मास्टर्ज़ की डिग्री हासिल की। इस दौर में सिंध में तालीमी इदारों की कमी थी तो तालीम के शौक़ की वजह से हैदराबाद में एक कॉलेज में बतौर लेक्चरर काम शुरू किया। उनके शौक़ को देखकर वहां के प्रिंसिपल ने उनको कहा कि नवाबशाह में एक तालीमी इदारा खोलें और evening क्लासिज़ वहां शुरू करें। इसलिए वह क्लासें खोली गईं और उसने बड़ी तरक़्क़ी की। इस के बाद वह कॉलेज बन गया और उनकी मेहनत की वजह से सिंध के मशहूर कॉलिजों में इस का शुमार होने लगा। इसी तरह सिंध के समस्त बड़े सयासी घरानों के साथ बहुत अच्छे ताल्लुक़ात थे और खुल कर उनको बताते थे कि मेरा ताल्लुक़ जमाअत अहमदिया से है और बच्चों को भी ये कहा कि कभी ख़ौफ़ नहीं करना कि अपनी अहमदियत को छुपाओ और सिंधी में हमेशा यह कहा करते थे कि हम तो अहमदियत के ज़ेवर पहने हुए हैं जो एक इमतेयाज़ी निशान है

हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला के इरशाद पर आप को सिंधी ज़बान में क़ुरआन-ए-करीम का अनुवाद करने की सआदत भी मिली और हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह सालिस के इरशाद के मुताबिक़ तफ़सीर-ए-सग़ीर का सिंधी में दो जिल्दों पर मुश्तमिल अनुवाद करने का भी अवसर मिला है। क़ुरआन--ए-मजीद के अनुवाद और मुंतख़ब आयात के एक पमफ़लेट की इशाअत पर हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह अलराबे रहमहुल्लाह तआला के इलावा चार अफ़राद पर 295-C का मुक़द्दमा दर्ज हुआ था जिनमें आपका नाम भी शामिल था। सिंधी ज़बान के इलावा उर्दू ज़बान पर भी इस क़दर उबूर हासिल था कि जिसको भी मुख़ातब हो कर लिखते वह तहरीर से मुतास्सिर होता। फ़ज़ले उम्र फ़ाउंडेशन के मैंबर भी रहे। यूनीवर्सिटी से पी एच डी के स्टूडैंट भी आपसे राहनुमाई लेने के लिए आते थे। आपका हलक़ा अहबाब बड़ा वसीअ था। सिंधी ज़बान में एक किताब भी लिखी जो तालीमी माहेरीन और शागिर्दों की राहनुमाई के लिए बहुत एहमियत रखती है। इसके इलावा सिंध के डाहर क़बीले के बारे में डिक्शनरी में मौजूद मवाद को जिस में तज़हीक आमेज़ ज़बान इस्तिमाल की गई थी आपने क़ुरआन-ए-करीम के अहकामात की रोशनी में मुतअद्दिद हुक्काम को दलायल से क़ायल किया और इस डिक्शनरी से तज़हीक आमेज़ अलफ़ाज़ मिनहा करवाए। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके बच्चों को भी नेकियां जारी रखने की तौफीक दे।

एक वर्णन और है जो प्रोफ़ैसर डाक्टर मुहम्मद शरीफ़ ख़ान साहब का है जो आजकल अमरीका में थे। चौरासी वर्ष की आयु में यह वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे।

1939 ई. में तनज़ानिया में पैदा हुए। उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके वालिद डाक्टर हबीबुल्लाह ख़ान साहब के ज़रीया आई जिन्हों ने तनज़ानिया में अहमदियत क़बूल की थी। शरीफ़ ख़ान साहब ने इबतेदाई तालीम कादियान से हासिल की। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के 1954-55 के ख़ुतबात के नतीजे में आठवीं क्लास में ज़िंदगी वक़्फ़ कर दी। फिर 1963 ई. में पंजाब यूनीवर्सिटी से गोल्ड मैडल लेते हुए ऐम एस सी ज़वालोजी किया। 96 ई. में पंजाब यूनीवर्सिटी से ज़ायलोजी में पी एचडी की। हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला के इरशाद के मुताबिक़ 63 ई. में ख़िदमत के लिए तालीमुल इस्लाम कॉलेज से वाबस्ता हुए और 98 ई. में अपनी रिटायरमैंट तक उन्हें पैंतीस वर्ष ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। दुनिया-भर के रसाइल में प्रोफ़ैसर साहिब के दो सौ पच्चास के क़रीब रिसर्च पेपर प्रकाशित हुए हैं। आपका पहला तहक़ीक़ी मक़ाला 1972 ई. में प्रकाशित हुआ जो रपटाइलज़ (Reptiles) के बारे में उनका मज़मून था। बहुत रिसर्च किया करते थे और साँपों और छिपकलियों इत्यादि के, कीड़ों इत्यादि के बारे में और क़ुदरत के हशरातुल अर्ज़ हैं उनके बारे में बड़ी तहक़ीक़ थी।

मैं भी उनका शागिर्द रहा हूँ। हमारी क्लास को बाहर ले जाया करते थे और फिर जा के यह चीज़ें दिखाया करते थे कि क़ुदरत ने क्या-क्या चीज़ें पैदा की हैं और किस-किस तरह के कीड़े इस में पाए जाते हैं और किस किस्म की कसमें हैं।

2002 ई. में उन्हें पाकिस्तान में Zoologist Of The Year के ऐवार्ड से नवाज़ा गया।

मुजीबुल्लाह चौधरी साहिब अमरीका लिखते हैं कि 2008 ई. में मैं ने मस्जिद का चंदा इकट्ठा करने के सिलसिले में बात की तो कहने लगे हमारे पास पेश करने के लिए कुछ नहीं है लेकिन उन्होंने कहा घर आ जाओ। घर गया तो बेगम भी उनकी आ गईं और एक पोटली निकाल कर सामने रख दी और जो ज़ेवर था उनके माँ बाप की तरफ़

से या ससुराल की तरफ़ से जो कुछ भी मिला था वह सामने पेश कर दिया कि यही हमारे पास है यह ले जाओ। बड़े शरीफुल-नफ़्स और आजिज़ इन्सान थे। विद्यार्थियों से हमेशा घुल मिलकर दोस्तों की तरह रहते थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सलूक फ़रमाए।

उनकी यह बाअज़ बातें बाद में आई हैं। उनके बड़े बेटे ज़फ़रुल्लाह साहिब भी लिखते हैं कि कुछ साईंसदान अमरीका और कैनेडा से प्रोफ़ैसर डाक्टर शरीफ़ ख़ान साहब से मिलने रब्वाह आए और बाक़ौल उन साईंसदानों के पाकिस्तान रपटालोजी (reptology) अर्थात जो रपटाइलज़ इत्यादि हैं उनके ऊपर कहते हैं कि शरीफ़ ख़ान साहब से बड़ा और कोई माहिर पाकिस्तान में नहीं है। बहुत माहिर थे।

उनके बेटे राशिद ज़ुबैर कहते हैं जवानी से ही तहज्जुद गुज़ार और नमाज़ रोज़े के पाबंद थे और मस्जिद क़मर में नमाज़ की इमामत भी करवाया करते थे। बाजमाअत नमाज़ के इलावा क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत और तफ़सीर पढ़ने का बहुत शौक़ था। इस पर मुताला भी बहुत वसीअ था।

मशहूद अहमद ख़ान उनका पोता है। कहता है हमारे दादा ने जो बड़ी रुहानी शख़्सियत थे और गहरा साईंसी इदराक भी था उन्होंने हमें सिखाया कि ख़ुदा की हस्ती का सबूत फ़ित्रत में पाया जाता है। नमाज़ों को बरवक़्त अदा करने की और क़ुरआन-ए-करीम का मुताला करने पर बहुत ज़ोर दिया करते थे। ख़िलाफ़त अहमदिया से बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी और हमेशा समय के ख़लीफ़ा को ख़त लिखते और ख़ुतबात सुनने की तरफ़ अपनी भी तवज्जा थी और घर वालों को भी तवज्जा दिलाते और हौसला-अफ़ज़ाई करते। अल्लाह तआला उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

(रोज़नामा अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 27 अक्तूबर 2023 पृष्ठ 2 से 7)

★ ★ ★

पृष्ठ 02 का शेष

इसके नतीजे में तुम जंग-ए-बदर के हादिसे और मुसीबत को भूल जाओगे। और सफ़वान हराने वाले सवार से उमेर की कार-गुज़ारी के मुताल्लिक़ पूछा करता था। आख़िर एक सवार मुक्के पहुंचा और उसने सफ़वान को बताया कि उमेर इस्लाम क़बूल कर चुके हैं। सफ़वान ने हलफ़ उठाया कि कभी इस से बात नहीं करूँगा और कभी उसको कोई नफ़ा नहीं पहुंचाऊंगा। इसके बाद जब उमेर मक्का पहुंचे तो अब वे मुस्लमान हो गए थे तो वे पहले सफ़वान के घर नहीं गए बल्कि सीधा अपने घर गए वहां उन्होंने घर वालों के सामने अपने इस्लाम का ऐलान किया और उनको मुस्लमान होने की दावत दी। जब सफ़वान को इस बात की सूचना हुई तो उसने कहा मैं पहले ही समझ गया था कि क्यों वे पहले मेरे पास आने के बजाय अपने घर गया है। वे बेदीन और गुमराह हो गया है। मैं अब कभी इस से बात नहीं करूँगा और न उसे और न उस के घर वालों को कभी मेरी ज़ात से कोई फ़ायदा पहुँचेगा।

मुशरेकीन भी अपने शिर्क को दीन समझते थे और एक ख़ुदा की इबादत को गुमराही। आजकल भी यही हाल है।

इसके बाद उमेर सफ़वान बिन अमय के पास पहुंचे और इसको पुकार कर कहा तुम हमारे सरदारों में से एक सरदार हो। तुम्हें मालूम ही है कि हम पत्थरों की पूजा और उनके लिए क़ुर्बानियां किया करते थे। क्या यह कोई दीन हुआ मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं है और यह कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं मगर सफ़वान ने अमीर की बात का न कोई जवाब दिया और न उस की तरफ़ मुतवज्जा हुआ।

(अल् सीरतुल हलबिया भाग 2 पृष्ठ 268 से 270 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

इस वाक़िया के मुताल्लिक़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में भी लिखा है कि कुफ़्फ़ार-ए-मक्का जो अब तक केवल ज़ाहिरी ज़ोर और घमंड पर लड़ रहे थे अब एक खुले मैदान में मुस्लमानों से पराजय उठा कर मख़फ़ी और दरपर्दा साज़िशों की तरफ़ भी मायल होने लग गए। इसलिए ये तारीख़ी वाक़िया जो जंग-ए-बदर के केवल चंद दिन बाद वक़ूअ में आया इस ख़तरे की एक स्पष्ट मिसाल है। लिखा है कि बदर के चंद दिन बाद उमेर बिन वहब और सफ़वान बिन अमय बिन ख़लफ़ जो ज़ी असर क़ुरैश में से थे काबा के सहन में बैठे हुए मक़्तूलीन-ए-बदर का मातम कर रहे थे और वही बातें जिनका पहले वर्णन हो चुका है वह आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने यहां तहरीर फ़रमाई हैं कि वे ये बातें कर रहे थे। यही कह रहे थे कि अब तो जीने का मज़ा नहीं रहा और उमेर ने यह भी कहा कि मैं तो अपनी जान को ख़तरे में डालने के लिए तैयार हूँ अगर मेरा क़र्ज़ मुझे रोकता न हो और मेरे बच्चों की मुझे फ़िक्र न हो और मेरे उनके पास जाने का एक बहाना भी है कि मेरा लड़का उनके पास क़ैद है तो वहां जा के मैं नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़तल कर दूं। बहरहाल उसके बाद सफ़वान ने क़र्ज़ उतारने और बच्चों की परवरिश करने के बारे में वादा किया, जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है। इस के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने यहां यह भी लिखा है कि बहरहाल उसके बाद उमेर अपने घर आया, तलवार ज़हर में बुझा कर मक्के से निकल खड़ा हुआ। मदीने पहुंचा तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जो इन बातों में बहुत होशयार थे उसे देख कर ख़ौफ़ज़दा हुए और फ़ौरन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से जाकर अर्ज़ किया कि उमेर आया है और मुझे उसके मुताल्लिक़ संतोष नहीं है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उसे मेरे पास ले आओ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उसको लेने के लिए गए और जाते हुए सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को भी कह गए कि उमेर को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मिलाने के लिए लाता हूँ। मुझे उसकी हालत कोई मुश्तबा मालूम होती है। तुम लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास जाकर बैठ जाओ और चौकस रहो। इस के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उमेर को साथ लिए हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे नरमी के साथ अपने पास बिठा कर पूछा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस से पूछा क्यों उमेर कैसे आना हुआ? उमेर ने कहा मेरा लड़का आपके हाथ में क़ैद है उसे छुड़ाने आया हूँ। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तो यह तलवार क्यों लटकाई हुई है? यह क्यों गले में डाली हुई है। उसने कहा आप तलवार का क्या कहते हैं? बदर में तलवारों ने क्या काम किया था? बड़ी होशयारी से बातें करने लगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : नहीं। ठीक-ठीक बताओ कैसे आए हो? उसने वही बात कही कि बात वही है जो में पहले कह चुका हूँ कि बेटे को छुड़ाने आया हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अच्छा तो गोया तुम ने सफ़वान के साथ मिलकर सेहन काबा में कोई साज़िश नहीं की। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इशारा दिया साज़िश का। उमेर यह बात सुनके सन्नाटे में आ गया मगर सँभल कर बोला। नहीं मैं ने कोई साज़िश नहीं की। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया क्या तुमने मेरे क़तल का मन्सूबा नहीं किया? परंतु याद रखो! ख़ुदा तुम्हें मुझ तक पहुंचने की तौफ़ीक़ नहीं देगा। उमेर एक गहरे फ़िक्र में पड़ गया और फिर बोला आप सच्च कहते हैं हमने वाक़ई ये साज़िश की थी परंतु मालूम होता है कि ख़ुदा आपके साथ है जिसने आप को हमारे इरादों से इत्तिला दे दी अन्यथा जिस समय मेरी और सफ़वान की बात हुई थी उस समय वहां कोई तीसरा शख़्स मौजूद नहीं था और शायद ख़ुदा ने ये तजवीज़ मेरे ईमान लाने ही के लिए करवाई है और मैं सच्चे दिल से आप पर ईमान लाता हूँ।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उमेर के इस्लाम से ख़ुश हुए और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया। अब यह तुम्हारा भाई है उसे इस्लाम की तालीम से आगाह करो और इस के क़ैदी को छोड़ दो। अल-ग़र्ज़ उमेर बिन वहब्ब मुस्लमान हो गए और बहुत जल्द उन्होंने ईमान और इख़लास में नुमायां तरक़्क़ी करली और अंततः नूर-ए-सदाक़त के इस क़दर गरवीदा हुए कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से ज़ोर देते हुए अर्ज़ किया कि मुझे मक्का जाने की इजाज़त मर्हमत फ़रमाएं ताकि मैं वहां के लोगों को जा कर तब्लीग़ करूँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इजाज़त दी और उमेर ने मक्का पहुंच कर अपने जोश-ए-तब्लीग़ से कई लोगों को ख़ुफ़ीया ख़ुफ़ीया मुस्लमान बना लिया। सफ़वान जो दिन रात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़तल की ख़बरें सुनने का मुंतज़िर था और क़ुरैश से कहा करता था कि अब तुम एक ख़ुशख़बरी सुनने के लिए तैयार रहो। उसने जब यह नज़ारा देखा तो बे-ख़ुद सा रह गया।

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 374 से 376)

बदर के बाद बाअज़ लोग मुस्लमान भी हुए लेकिन मुनाफ़िक़ाना रंग रखते थे उनमें अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल भी था।

अल्लामा इब्ने कसीर सूरः बक़रः की आयत नौ, दस की तफ़सीर में लिखते हैं कि जब ग़ज़व-ए-बदर का वाक़िया पेश आया और अल्लाह तआला ने अपने कलमे को ग़ालिब किया और इस्लाम और अहल-ए-इस्लाम को इज़्ज़त दी तो अब्दुल्लाह बिन अबे बिन सलूल जो मदीने का रईस और बनू ख़ज़रज में से था और ज़माना-ए-जाहिलीयत में इन दोनों क़बायल अर्थात ओस और ख़ज़रज का सरदार था उन लोगों ने

इरादा कर लिया था कि वे उन पर हुकूमत करेगा। अर्थात अब्दुल्लाह बिन उबे को अपना सरदार बना रहे थे। एक रिवायत में है कि उसकी क़ौम ताज बनवा कर उसे बादशाह बनाने की तैयारियों में मसरूफ़ थी। इसी दौरान भलाई आ पहुंची अर्थात इस्लाम का पैग़ाम पहुंच गया और लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया और उसे भूल गए। इस वजह से इस्लाम और अहल इस्लाम उसके दिल में खटकने लगे। जब बदर का वाक़िया हुआ तो वे कहने लगा ये उमर तो अब ग़ालिब आता जा रहा है। पहले तो इस का ख़्याल था कि थोड़े से लोग हैं जब बदर की जंग जीती गई तो इस से इस को फ़िक्र पैदा हुई इसलिए उसने बज़ाहिर इस्लाम क़बूल किया और इसके नक़श-ए--क़दम पर चलते हुए उसके पैरोकारों की एक जमाअत ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया और बाअज़ अहल-ए-किताब भी उनके साथ थे।

(तफ़सीर इब्ने कसीर भाग 1 पृष्ठ 87 ज़ेर-ए-आयात ...ومن الناس من یقول ومایشعرون,दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1998 ई.)

(सिब्लुल् हुदा वल्रिशाद भाग 3 पृष्ठ 418 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस तरह लिखा है कि "अभी तक मदीना में क़बायल ओस और ख़ज़रज के बहुत से लोग शिर्क पर क़ायम थे। बदर की फ़तह ने उन लोगों में एक हरकत पैदा कर दी और उन में से बहुत से लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस अज़ीमुश्शान और ख़ारिक़ आदत फ़तह को देखकर इस्लाम की हक़्क़ानियत के क़ायल हो गए। और इस के बाद मदीना से बुतपरस्त लोग बड़ी तेज़ी के साथ कम होना शुरू हो गया परंतु कुछ ऐसे भी थे जिनके दिलों में इस्लाम की इस फ़तह ने द्वेष और उपद्रव आफ़त की चिंगारी रोशन कर दी और उन्होंने बरमला मुख़ालेफ़त को ख़िलाफ़-ए- मसलेहत समझते हुए बज़ाहिर तो इस्लाम क़बूल कर लिया लेकिन अंदर ही अंदर उसके इस्ती-साल के दर पर हो हो कर मुनाफ़क़ीन के गिरोह में शामिल हो गए। इन ऊपर वर्णित लोगों में ज़्यादा मुमताज़ अब्दुल्लाह बिन अबी इब्ने सलूल था जो क़बीला ख़ज़रज का एक निहायत नामवर रईस था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मदीना में तशरीफ़ लाने के नतीजा में अपनी सरदारी के छीने जाने का सदमा उठा चुका था। यह शख़्स बदर के बाद बज़ाहिर मुस्लमान हो गया लेकिन उसका दिल इस्लाम के ख़िलाफ़ द्वेष और दुश्मनी से परिपूर्ण था नफ़ाक़ वालों का सरदार बन कर उसने मख़फ़ी मख़फ़ी इस्लाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ रेशा दिवानी का सिलसिला शुरू कर दिया। इसलिए बाद के वाक़ियात से पता लगेगा कि किस तरह ये शख़्स बाज़-औक़ात इस्लाम के लिए निहायत नाज़ुक हालत पैदा कर देने का बायस बना।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमअज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 376-377) इस की एक लंबी एक अलैहदा तारीख़ है

ग़ज़व-ए-बनू सुलेम या करकर्तुल कदर

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जब ग़ज़व-ए-बदर से लौटे तो चंद ही दिनों बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सूचना मिली कि बनूसुलेम और बनू ग़त्फ़ान के लोग करकरतुल कुदर के मुक़ाम पर जमा हैं और मदीने पर हमले की मंसूबा बंदी कर रहे हैं। करकरतुल एक चटियल मैदान में एक चशमा था उसका नाम है। यह इधर नजद के रास्ते में मक्का से शाम जाने वाली शाहराह पर मदीने से छयानवे मील की दूरी पर स्थित है :

बहरहाल यह ख़बर मिलते ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़ैसला किया कि बनू सलीम और बनू ग़त्फ़ान की तरफ़ अज़ख़ुद फ़ौरी पेशक़दमी करके उनके फ़ासिद इरादों को ख़ाक में मिला देना चाहिए। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तीन सौ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का लश्कर लेकर बनफ़स-ए--नफ़ीस करकरतुल कुदर की तरफ़ रवाना हो गए।

जंग के लिए रवानगी के बारे में मुख़्तलिफ़ राय हैं। इब्ने इसहाक़ के बाक़ौल रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ग़ज़व-ए-बदर से वापसी के सात दिन बाद आख़िर रमज़ान या शुरू शवाल दो हिज्री में इस मुहिम पर रवाना हुए थे। तबक़ात इब्ने साद में लिखा है ग़ज़ व-ए-बनू सलीम छः जमादी-उल-ऊला को पेश आया। वाक़दी के मुताबिक़ ग़ज़वा नसफ़ मुहर्रम तीन हिज्री में पेश आया। वाक़दी की ज़्यादा रिवायात उमूमन कमज़ोर ही होती हैं। इस ग़ज़वे की क़ियादत ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अल्मबरदार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो थे और इस्लामी झंडे का रंग सफेद था।

(सीरतुल हलबिया भाग 2 पृष्ठ 281 ग़ज़वा सुलेम, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

(अल्तबकातुल कुबरा भाग 2 पृष्ठ 27 ग़ज़व रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनी सलीम, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत1990 ई.)

(अलसीरतुल नब्वी लेइब्ने इसहाक़ भाग 1 पृष्ठ 319 ग़ज़वा सुलेम, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2004 ई.)

(किताबुल् मग़ाज़ी लिल्वाकदी भाग 1पृष्ठ 182 ग़ज़व करकर्तुल कदर, आलेमुल कुतुब बेरूत 1984 ई.)

(फ़र्हंग जीवनी पृष्ठ 242 मोअज्जमुल बुलदान भाग 4 पृष्ठ 501 आलेमुल नजद पृष्ठ 33 ज़ेर माद्दा ' बुरद' और "करकर" पृष्ठ : 624)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मदीना मुनव्वरा में हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे कतूम रज़ियल्लाहु अन्हो को अपनी नियाबत का शरफ़ अता फ़रमाया। यह भी कहा जाता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस अवसर पर हज़रत सिबा बिन उर्फ़त गुफ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हो को मदीना में अपना नायब निर्धारित किया था। बहरहाल इन दोनों बातों की वज़ाहत इस तरह की जाती है कि इंतेज़ामी फ़ैसलों के लिए हज़रत सिबा रज़ियल्लाहु अन्हो को नियाबत सौंपी और हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मकतूम रज़ियल्लाहु अन्हो को हसब-ए-मामूल नमाज़ पढ़ाने पर निर्धारित फ़रमाया :

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 280 ग़ज़वा सुलेम, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

बहरहाल दुश्मन को जब पता लगा कि इस्लामी लश्कर आ रहा है। बनूसलीम और बनू ग़त्फ़ान के लोगों को अचानक यह ख़बर पहुंची कि तीन सौ लोग आ रहे हैं तो उनके लिए यह बड़ा ग़ैर मुतवक़्क़े था। ख़ौफ़ज़दा हो कर वे लोग वहां से दौड़ गए और पहाड़ों की चोटियों के ऊपर पहुंचे।

(अल् तबकातुल कुबरा भाग 2 पृष्ठ 26 ग़ज़व रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनी सुलेम्, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत1990 ई.)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस्लामी लश्कर के साथ वादी कदर पहुंचे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ऊंटों के क़दमों के निशान के इलावा पानी के घाट भी नज़र आए लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस इलाक़े में दुश्मन का एक आदमी भी नहीं मिला।

(किताबुल् मग़ाज़ी लिल् वाकदी भाग 1 पृष्ठ 182 ग़ज़व करकरः अल्कदर, आलेमुल कुतुब बेरूत 1984 ई.)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो का एक दस्ता वादी की बालाई जानिब रवाना फ़रमाया और ख़ुद किसी मुज़ाहमत का सामना किए बग़ैर बतन-ए-वादी में तशरीफ़ ले गए। वहां आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इन क़बायल के कुछ चरवाहे मिले उनमें यसार नामी एक ग़ुलाम भी था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस से बनू सलीम और ग़त्फ़ान के लोगों के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया। उसने जवाब दिया कि मुझे उनके बारे में कुछ इलम नहीं। मैं तो बस ऊंटों को पानी पिलाता हूँ। कुछ को पांचवें दिन कुछ को चौथे दिन बारी आती है और मुक़ामी लोग चश्मों की तरफ़ ऊपर चढ़ गए हैं जबकि हम ऊंटों के रेवड़ के साथ इस मुआमले से बिलकुल अलग-थलग हैं। बहरहाल ये लोग क्योंकि जंग के इरादे से आए हुए थे, उनका सामान था तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ऊंटों और चरवाहों को हिरासत में ले लिया। तीन रात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वहां क़ियाम फ़रमाया एक रिवायत के मुताबिक़ दस रातें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रहे।

जितना अरसा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वहां क़ियाम पज़ीर रहे किसी को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुक़ाबले में आने की जुर्रत नहीं हुई। इस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बग़ैर किसी लड़ाई के फ़तहयाब हो कर वापिस आ गए।

(शरह अल् ज़र क़ानी अलल् मवाहेबुल दुनिया भाग 2 पृष्ठ 345 ग़ज़व बनी सुलेम, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

एक रिवायत में वर्णन हुआ है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जो ऊंट बतौर माल-ए-ग़नीमत मिले उनकी संख्या पाँच सौ थी। क्योंकि ये लोग जंग की ग़रज़ से आए हुए थे और अपना माल वहां छोड़ गए थे। इसलिए उस समय के रिवाज के मुताबिक़ ये जायज़ था कि उनका वे माल ले आया जाए। वे माल-ए-ग़नीमत था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस का ख़ुमस निकाला। बक़ीया चार-सौ मु-स्लमानों में तक़सीम कर दिए। प्रत्येक मुजाहिद को दो-दो ऊंट मिले। ये लश्कर दो सौ मुजाहेदीन पर मुश्तमिल था। यसार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हिस्से में आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे आज़ाद कर दिया। चरवाहा जो था उसे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आज़ाद कर दिया। आंहुज़ूर सल्ल-

ल्लाहो अलैहि व सल्लम इस मुहिम के लिए पंद्रह रोज़ तक मदीने से बाहर रहे।

(सिब्लुल् हुदा वर् रिशाद फ़ी सीरत ख़ैरुल अबाद भाग 4 पृष्ठ 172 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

इस की तफ़सील हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में इस तरह लिखी है कि "हिज्रत के बाद क़ुरैश-ए-मक्का ने मुख़्तलिफ़ क़बायल अरब का दौरा करके बहुत से क़बायल को मुस्लमानों का जानी दुश्मन बना दिया था। इन क़बायल में ताक़त और जत्थे के लिहाज़ से ज़्यादा अहम अरब के मध्य के इलाक़ा नजद के रहने वाले दो क़बीले थे जिनका नाम बनूसुलेम और बनू ग़त्फ़ान था और क़ुरैश मक्का ने इन दो क़बायल को ख़ुसूसियत के साथ अपने साथ गाँठ कर मुस्लमानों के ख़िलाफ़ खड़ा कर दिया था, इसलिए सर विलियम मियोर लिखते हैं कि "क़ुरैश मक्का ने अब अपनी तवज्जा इस नज्दी इलाक़ा की तरफ़ फेरी और इस इलाक़ा के क़बायल के साथ आगे से भी ज़्यादा गहरे ताल्लुक़ात क़ायम कर लिए और इस समय के बाद क़बायल सलीम व ग़त्फ़ान मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के सख़्त दुश्मन हो गए और उनकी इस दुश्मनी ने मुस्लमानों के ख़िलाफ़ अमली सूरत इख़्तेयार कर ली। इसलिए क़ुरैश की इश्तिआल अंगेज़ी और अबूसुफ़ियान के अमली नमूना के नतीजा में उन्होंने मदीना पर हमला-आवर होने की तजवीज़ पुख़्ता कर ली।"

ये मुस्तश्रिक़ है, उसने भी यह तस्लीम किया है कि वे इकट्ठे हो कर मदीने पर हमला करना चाहते थे इसलिए जो भी सुलूक उनके साथ हुआ और जो माल-ए--ग़नीमत लाए वे बिल्कुल जायज़ था।

बहरहाल आगे हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि "इसलिए जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बदर से वापस तशरीफ़ लाए तो अभी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मदीना में पहुंचे हुए सिर्फ़ चंद दिन ही हुए थे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह सूचना प्राप्त हुई कि क़बायल सुलेम व ग़त्फ़ान का एक बड़ा लश्कर मदीना पर हमला-आवर होने की नीयत से करकरा अल् कदर में जमा हो रहा है। जंग-ए-बदर के इस क़दर क़रीब उस सूचना का आना यह ज़ाहिर करता है कि जब क़ुरैश का लश्कर मुस्लमानों के ख़िलाफ़ हम-ला-आवर होने की नीयत से मक्का से निकला था तो क़ुरैश के सरदारों ने उसी समय क़बायल सुलेम व ग़तफ़ान को यह संदेश भेज दिया होगा कि तुम दूसरी तरफ़ से मदीना पर हमला आवर हो जाओ। या यह भी मुम्किन है कि जब अबूसुफ़ियान अपने क़ाफ़िला के साथ बच कर निकल गया, तो उसने किसी क़ासिद इत्यादि के ज़रीया इन क़बायल को मुस्लमानों के ख़िलाफ़ निकलने की तहरीक की हो। बहरहाल अभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जंग-ए-बदर से फ़ारिग़ हो कर मदीना में पहुंचे ही थे कि यह वहशत-नाक इत्तिला मौसूल हुई कि क़बायल सुलेम व ग़त्फ़ान मुस्लमानों पर हमला करने वाले हैं। यह ख़बर सुनकर आप फ़ौरन सहाबा रज़ियल्ला-हु अन्हो की एक जमईयत को साथ लेकर पेशबंदी के तौर नजद की तरफ़ रवाना हो गए लेकिन जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कई दिन का तकलीफ़-देह सफ़र ते करके मौज़ा अल्कुदर के करकरा अर्थात चटियल मैदान में पहुंचे तो मालूम हुआ कि बनू सलीम और बनु ग़त्फ़ान के लोग लश्कर-ए-इस्लाम की आमद आमद की ख़बर पा कर पास की पहाड़ियों में जा छुपे हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी तलाश में मुस्लमानों का एक दस्ता रवाना फ़रमाया और ख़ुद वादी की तरफ़ बढ़े परंतु उनका कुछ सुराग़ नहीं मिला। जबकि उनके ऊंटों का एक बड़ा गल्ला एक वादी में चरता हुआ मिल गया जिस पर क़वानीन जंग के अधीन "जो उस समय के क़वानीन-ए-जंग थे "सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़बज़ा कर लिया और इस के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना को वापस लौट आए। इन ऊंटों का चरवाहा एक यसार नामी ग़ुलाम था जो ऊंटों के साथ क़ैद कर लिया गया था। इस शख़्स पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सोहबत का ऐसा प्रभाव हुआ कि अभी ज़्यादा अरसा नहीं गुज़रा था कि वह मुस्लमान हो गया और जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हसब-ए-आदत उसे बतौर एहसान के आज़ाद कर दिया परंतु वह मरते दम तक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत से जुदा नहीं हुआ।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ा-दा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 452-453)

फिर मुस्लमानों की पहली ईदुल फ़ित्र के बारे में जो शवाल दो हिज्री में हुई उस के बारे में लिखा है कि हिज्रत के दूसरे बरस माह रमज़ान के इख़्तेताम पर आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पहली ईदुल फ़ित्र अदा फ़रमाई :

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 6 पृष्ठ 362 प्रकाशन दारुल मारूफ़ लाहौर 2022 ई.)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दरयाफ़त फ़रमाया कि जाहेलियत के समय में तुम जो दो दिन ख़ुशियां मनाया करते थे उनकी हक़ीक़त और हैसियत क्या है? वहां के रहने वालों ने अर्ज़ किया कि इस से पहले हम यह त्योहार बिल्कुल इसी तरह मनाया करते थे जो अब भी हैं। फ़रमाया अल्लाह तआला ने इन दो त्योहारों से बेहतर दिन तुम्हारे लिए निर्धारित फ़रमाए हैं। सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने ब-सद इश्तियाक़ पूछा वह कौन से दिन हैं हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा। इन दिनों में कोई रोज़ा न रखे बल्कि खाए पिए और ख़ुशियां मनाए

इन दोनों ईदों में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ईद-गाह तशरीफ़ ले जाते। ईद-गाह मदीने के मशरेक़ी हिस्से की तरफ़ थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ईद के दिन ईद-गाह एक रास्ते से तशरीफ़ ले जाते और दूसरे रास्ते से वापस होते थे इस से जलूस की शक्ल हो जाती और ग़ैर मुस्लिमों पर रोब तारी होता। एक-बार ईददुल फ़ित्र की नमाज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मस्जिद नब्वी में भी पढ़ाई क्योंकि इस नमाज़ के समय बारिश बहुत तेज़ थी।

(सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इन्साईक्लो पीडीया अज़ सय्यद क़ासिम महमूद भाग प्रथम पृष्ठ 411 मकतबा अल-फ़ैसल लाहौर 2014 ई.)

इस ईद के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा है कि ईदतुल फ़ित्र के ज़िमन में यह जो लिखा है वह यह है कि "रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ होने के बाद रमज़ान का आख़िर आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुदा से हुक्म पाकर सदकतुल फ़ित्र का हुक्म जारी फ़रमाया कि प्रत्येक मुस्लमान जिसे उस की ताक़त हो अपनी तरफ़ से और अपने अहल-ओ-अयाल और अनुयायी लोग की तरफ़ से फी कस एक साअ के हिसाब से खजूर या अंगूर या जो या गंदुम इत्यादि बतौर सदक़ा ईद से पहले अदा करे और यह सदक़ा गरीबों और मसाकीन और यतामा और बेवगान इत्यादि में तक़सीम कर दिया जाए ताकि इस्तिताअत वाले लोगों की तरफ़ से इबादत सौम की कमज़ोरियों का कफ़्फ़ारा हो जाए और गरीबों के लिए ईद के अवसर पर एक इमदाद की सूरत निकल आए। इसलिए आँहज़रत सल्लल्ला-हो अलैहि व सल्लम के हुक्म से प्रत्येक ईद रमज़ान से पहले सदक़ातुल् फ़ितर बाक़ायदा तौर पर प्रत्येक छोटे बड़े मर्द औरत मुस्लमान से वसूल किया जाता था और यतामा और गरीब और मसाकीन में तक़सीम कर दिया जाता था।

ईदुल् फ़ित्र भी इसी वर्ष शुरू हुई अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि रमज़ान का महीना ख़त्म हो जाने पर शवाल की पहली तारीख़ को मुस्लमान ईद मनाया करें।

यह ईद इस बात की ख़ुशी में है कि अल्लाह तआला ने हमें रमज़ान की इबादत अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई है। परंतु क्या शान दिलरुबाई है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस ख़ुशी के इज़हार के लिए भी एक इबादत ही मुक़र्रर फ़रमाई :

इसलिए हुक्म दिया कि ईद के दिन समस्त मुस्लमान किसी खुली जगह जमा हो कर पहले दो रकात नमाज़ अदा किया करें और फिर उस नमाज़ के बाद बे-शक जायज़ तौर पर ज़ाहिरी ख़ुशी भी मनाएं क्योंकि रूह की ख़ुशी के समय जिस्म का भी हक़ है कि वे ख़ुशी में हिस्सा ले। दरअसल इस्लाम ने इन समस्त बड़ी बड़ी इबादतों के इख़्तेताम पर जो इजतेमाई तौर पर अदा की जाती हैं, ईदें रखी हैं, इसलिए नमाज़ों की ईद जुम्मा है जो गोया प्रत्येक हफ़्ता की नमाज़ों के बाद आता है और जिसे इस्लाम में सारी ईदों से अफ़ज़ल क़रार दिया गया है। फिर रोज़ों की ईद ईदुल् फ़ित्र है जो रमज़ान के बाद आती है और हज की ईद ईदुल् अज़हा है जो हज के दूसरे दिन मनाई जाती है ओरया सारी ईदें फिर ख़ुद अपने अंदर एक इबादत हैं। अल-ग़र्ज़ इस्लाम की ईदें अपने अंदर एक अजीब शान रखती हैं और उन से इस्लाम की हक़ीक़त पर बड़ी रोशनी पड़ती और यह अंदाज़ा करने का अवसर मिलता है कि किस तरह इस्लाम मुस्लमानों के प्रत्येक कामों का वर्णन अल्लाह के साथ पैवंद करना चाहता है। अतः याद रखना चाहिए कि ईदों की यह एहमियत है कि हमेशा केवल ख़ुशियां नहीं बल्कि अल्लाह तआला का वर्णन भी होना चाहिए और इबादत भी होनी चाहिए।

फ़रमाते हैं कि "मुझे तारीख़ से हटना पड़ता है अन्यथा मैं बताता कि किस तरह इस्लाम ने एक मुस्लमान की प्रत्येक हरकत व सकून और प्रत्येक कथनी और करनी को ख़ुदा की याद का ख़मीर दिया है। यहाँ तक कि रोज़मर्रा के मामूल उठने बैठने, चलने फिरने, सोने जागने, खाने पीने, नहाने धोने, कपड़े बदलने, जूता पहनने, घर से बाहर जाने, घर के अंदर आने, सफ़र पर जाने, सफ़र से वापस आने, कोई चीज़ बेचने, कोई चीज़ ख़रीदने, बुलंदी पर चढ़ने, बुलंदी से उतरने, मस्जिद में दाख़िल

होने, मस्जिद से बाहर आने, दोस्त से मिलने, दुश्मन के सामने होने, नया चांद देखने, पत्नी के पास जाने, उद्देश्य हर काम के शुरू करने और ख़त्म करने यहाँ तक कि छींक और अब्बासी तक लेने को किसी न किसी तरह ख़ुदा के वर्णन के साथ वाबस्ता कर दिया है।"

अतः यह इस्लाम की तालीम है जिसे हमेशा प्रत्येक हक़ीक़ी मुस्लमान को सामने रखना चाहिए कि अल्लाह तआला हर वक़त, प्रत्येक बात में हमारे सामने होना चाहिए।

"इस हालत में अगर मुशरेकीन अरब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुताल्लिक़, जो दरअसल इस तालीम के लाने वाले लेकिन कुफ़्फ़ार के ख़्याल में इस तालीम के बनाने वाले थे, ये कहते हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को ख़ुदा का जुनून हो गया है तो कोई ताज्जुब की बात नहीं। वाक़ई एक दुनिया-दार को ये बातें जुनून के सिवा और कुछ नज़र नहीं आ सकतीं परंतु जिसने अपनी हस्ती की हक़ीक़त को समझा है वे जानता है कि ज़िंदगी उसी का नाम है।" (ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 337-338) हक़ीक़ी ज़िंदगी यही है कि ख़ुदा तआला की याद हमेशा इन्सान को रहे।

इस अर्से में जंग-ए-बदर के बाद और ओहद से पहले दो मुश्तबा वाक़ियात का भी वर्णन मिलता है जिनका अगर सरसरी जायज़ा भी लिया जाए तो साफ़ ज़ाहिर होता है, और साफ़ पता लग रहा हैकि मन घड़त कहानी है।

पहला वाक़िया असमा बिन्त मरवान का क़तल है यह वर्णन किया जाता है कि उस का क़तल किया गया और उस की तफ़सील में वर्णन हुआ है कि हज़रत अमीर बिन अदी ख़ितमी एक नाबीना सहाबी थे। हज़रत उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो क़बीला बनू खित्मा में सबसे पहले मुस्लमान हुए। हिज्रत का दूसरा वर्ष था। रमज़ान की पाँच रातें बाक़ी थीं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उमेर बिन अदी ख़ितमी को अस्मा बिंत मरवान की तरफ़ भेजा जो यहूदी औरत थी और मुर्सिद बिन ज़ैद बिन हिस्न अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो की पत्नी थी जो मुस्लमान हो गए थे। अस्मा बिंत मरवान के क़तल का हुक्म देने की वजह यह थी कि यह इस्लाम को गालियां दिया करती थी। यह वर्णन किया जाता है कि इसलिए भेजा कि इस्लाम को गालियां दिया करती थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ लोगों को उभारती थी और अशआर कहती थी। एक रिवायत में आता है कि यह औरत गंदे कपड़े मस्जिद नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में ले जा कर डाल दिया करती थी। इस कहानी को बनाने के लिए इस रिवायत में यह भी शामिल कर लिया गया है। और इस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और मुस्लमानों को तकलीफ़ पहुंचाया करती थी। हज़रत उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो रात के अंधेरे में इस के घर में दाख़िल हुए। बाक़ौल उनके जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया तो रात के अंधेरे में इस औरत के घर गए, उसकी औलाद उस के इर्द-गिर्द सोई हुई थी और एक बच्चे को वे दूध पिला रही थी। उमेर ने अपने हाथ से उसे टटोला और इस बच्चे को इस से दूर किया और अपनी तलवार उसके सीने पर रख कर पूरा ज़ोर डाल दिया यहां तक कि तलवार उसकी कमर से पार हो कर निकल गई। इस के बाद उमेर बिन अदी ने मदीने आ कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे सुबह की नमाज़ अदा की। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर उठे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नज़र उमेर पर पड़ी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस से पूछा क्या तुमने मरवान की पुत्री को क़तल कर दिया है? उन्होंने अर्ज़ किया हाँ। क्या उसके क़तल के नतीजा में मुझ पर कोई गुनाह हुआ है? अब ये पूछ रहे हैं । एक तरफ़ तो लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनको भेजा था। अब ये पूछ रहे हैं क्या क़तल के नतीजे में मुझे गुनाह हुआ है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जवाब में अरबी का एक ग़ैर-मारूफ़ मुहावरा बोला और फ़रमाया। لَا يَنْتَطِحُ فِيهَا عَنْزَانِ, उसकी वजह से तो दो बकरियां भी बाहम न लड़ेंगी। अर्थात उस औरत का क़तल इतना हक़ीर और मामूली है कि उस की मुख़ालेफ़त करने वाला भी उसकी मुख़ालिफ़त नहीं करेगा। लिखते हैं यह कलमा या मुहावरा इन कलिमात में से है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इलावा किसी की ज़बान से नहीं सुने गए। यही एक रिवायत यहां मिलती है। बह-रहाल इस वाक़े के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उमेर का नाम बसीर अर्थात बीना रख दिया। हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा इस अंधे की तरफ़ देखो जिस ने इताअत-ए-अलाही में रात बसर की है। आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे फ़रमाया उन्हें अंधा न कहो बल्कि उन्हें बसीर कहो।

एक रिवायत में अस्मा के क़तल का वाक़िया यूं वर्णन हुआ है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अस्मा बिंत मरवान के क़तल का इरादा किया तो लोगों से फ़रमाया क्या कोई शख़्स है जो हमें इस औरत से निजात दिला सके? इस पर उमेर बिन अदी ने कहा कि इस का काम समस्त करना मेरे ज़िम्मा है। इस के बाद यह अस्मा के पास पहुंचे। वे औरत खजूर फ़रोख़्त कर रही थी। उमेर ने उस के सामने रखी ख़जूरों की तरफ़ इशारा कर के कहा क्या तुम्हारे पास इन ख़जूरों से अच्छी खजूरें हैं? उसने कहा हाँ और वह यह कह कर अपने मकान के अंदर गई और खजूरें उठाने के लिए झुकी। वे कहते हैं मैं ने दाएं बाएं देखा। मैं ने उसके सिर पर वार किया और उस को क़तल कर दिया। तब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया अगर तुम ऐसे शख़्स की तरफ़ देखना चाहो जिसने अल्लाह और इस के रसूल की नुसरत की है तो उमेर बिन अदी को देख लो।

एक रिवायत में यह है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अस्मा मरवान की पुत्री का ख़ून जायज़ क़रार दिया तो हज़रत उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मन्नत मानी थी कि अगर अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जंग-ए-बदर से ख़ैरीयत के साथ मदीना पहुंचना नसीब फ़रमाया तो में अस्मा को क़तल करूँगा अर्थात बदर की जंग में जाने से पहले यह हुक्म दिया था और उन्होंने कहा कि जंग से वापसी पर मैं क़तल कर दूँगा। इसलिए जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बदर से कामयाब-ओ-कामरान हो कर मदीना मुनव्व-रा वापस आ गए तो हज़रत उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी मन्नत पूरी करने के लिए अस्मा के घर जा कर उस को क़तल किया। एक रिवायत में आता है कि अस्मा बिंत मरवान को क़तल करने के बाद जब हज़रत उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो उस मुहल्ले में वापस आए तो उस औरत के बेटे एक गिरोह के साथ अपनी माँ को दफ़न कर रहे थे। उमेर को देखकर उन्होंने कहा उमेर क्या तुमने उसे क़तल किया है? उन्होंने कहा हाँ। फिर कहा فَكِيدُونِي جَمِيعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُونِ अतः तुम सब मिलकर मेरे ख़िलाफ़ चालें चलो फिर मुझे कोई मोहलत न दो। मुझे उस ज़ात की क़सम! जिसके दस्त-ए--तसर्रुफ़ में मेरी जान है अगर तुम सारे मिलकर भी वही बातें कहो जो ये औरत कहा करती थी तो तुम सबकी गर्दनें अपनी इस तलवार से उड़ाना शुरू कर दूँगा यहां तक कि या तो मैं शहीद हो जाऊँगा या तुम्हें वासिल-ए-जहन्नुम कर दूँगा। उस रोज़ से क़बीला बनू ख़त्मा में खुल कर इस्लाम फैलने लगा अन्यथा इस से पहले उनमें जो लोग मुस्लमान हो चुके थे वे भी अपना मुस्लमान होना छुपाया करते थे।

अल्लामा सुहेली ने लिखा है कि अस्मा को क़तल करने वाले उस के शौहर थे और किताब इस्तेआब में हज़रत उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो के हालात के तहत लिखा है कि उन्होंने अपनी बहन को भी क़तल किया था क्योंकि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को गालियां दिया करती थी परंतु इस्तेआब में उमेर की बहन का नाम वर्णित नहीं।

(सीरतुल हल्बिया (अनुवादक) भाग 3 पृष्ठ 482 से 485 प्रकाशन दारुल ईशात कराची 2009 ई.)

(सिब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 6 पृष्ठ 21 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

तो ये सारी कहानी वर्णन की गई हैं। तारीख़-ओ-सीरत की कुछ पुस्तकों में ये वाक़िया मिलता है लेकिन सहा सित्ता और हदीस की किसी भी मोतबर किताब में इस का वर्णन नहीं है।

असल वाक़िया यह है कि बाद के ज़माने के कुछ लोगों ने इस तरह के फ़र्ज़ी और मन घड़त वाक़ियात को न केवल अपनी किताबों में जगह दी है बल्कि तौहीन-ए--रिसालत की सज़ा के ज़िमन में दलील के तौर पर पेश करने लग गए हैं और आजकल के मुल्लां इस बात को ले के यही तो दलील देते हैं कि जो तौहीन-ए-रिसा-लत करे उसको क़तल कर दो जबकि तौहीन-ए-रिसालत की किसी किस्म की कोई ऐसी सज़ा शरीयत इस्लाम में मौजूद नहीं है और न ही इस तरह के वाक़ियात की कोई हक़ीक़त है।

उदारणतः जब हम इस वाक़िया का तजज़ियाती मुताला करें तो मालूम होता है कि अव्वल तो सनद के एतबार से यह रिवायत कमज़ोर है और अल्लामा अल्बानी ने इस हदीस को मोज़ू क़रार दिया है। इसलिए अल्लामा नासिरुद्दीन एल्बानी ने उसे अपनी किताब सिल्सिलातुल हदीस ज़ईफ वल् मोज़ू में लिखा है कि इस का एक रावी मुह-म्मद बिन उम्र वाक़दी है जो कज़्ज़ाब है और इब्ने मुईन ने उसे ज़ईफ़ कहा है।

(सिल्सिलातुल हदीस ज़ईफ वल् मोज़ू भाग 13 पृष्ठ 34-35 रिवायत नंबर 6013 मकतबा अल् मारूफ़ अल् रियाज़ 2004 ई.)

इसके इलावा दिरायत के लिहाज़ से देखा जाए तो इस रिवायत के बारे में कई सवालात उठते हैं। उदाहरणतः सहाबी नाबीना होने के बावजूद उस औरत के घर तक अकेले कैसे पहुंचे? वे यह कह दें कि जी पहले जाते होंगे तो रास्ता देखा हुआ था।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 30 November 2023 Issue No. 48

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

बाक़ायदा जाते हों तो फिर रास्ता टटोल के पहुंच गए लेकिन ऐन रात को अकेले वहां पहुंच भी गए, दरवाज़े पर भी पहुंच गए, अंदर भी चले गए। फिर यह कि औरत को रात के अंधेरे में कैसे ढूंढ निकाला? यह पता किस तरह लगा कि इर्द-गिर्द उस के बच्चे भी सो रहे हैं? चलो प्रत्येक को टटोलते रहे और फिर पता लगा और इस टटोलने के दौरान में कोई नहीं जागा। टटोल कर यह भी मालूम कर लिया कि वे बच्चे को दूध पिला रही थी। फिर उस मक़्तूला ने मौत को सामने देखकर भी नाबीना से अपने दिफ़ा या बच्चे को बचाने के लिए कोई कोशिश या मुज़ाहमत नहीं की हालाँकि क़ातिल ने रिवायत के मुताबिक़ इस दूध पीते बच्चे को ज़बरदस्ती अलग किया था। वह नाबीना थे और औरत की आँखें थीं तब भी उसने न शोर मचाया न कोई मुज़ाह-मत की। उस का शौहर भी वहां सो रहा था उस को भी कोई ख़बर नहीं हुई और सबसे बढ़कर यह कि नाबीना सहाबी को कोई आवाज़ दिए बग़ैर कैसे पता चल गया कि वही औरत अस्मा बिंत मरवान ही थी, उमूमी तौर पर नाबीना आवाज़ों से हैं।

एक दूसरी रिवायत जो है। कहानियां भी मुख़्तलिफ़ हैं नाँ। अब दूसरी कहानी में यह है कि वे औरत जब खजूर लेने अंदर गई तो सहाबी ने इधर उधर देखा तो उन्हें कोई नज़र न आया। यह बात काबिल-ए-ग़ौर है कि सहाबी तो नाबीना थे। इस सूरत में इधर उधर कैसे देख सकते थे और कैसे कह सकते थे कि मैं ने इधर उधर देखा तो कोई नज़र न आया बल्कि पहले से पड़ी हुई ख़जूरों को देखकर यह भी अंदाज़ा हो गया कि ये खजूरें उम्दा नहीं हैं। अगर कोई यह कहे कि हाथ लगा के देखा था तो चलो ठीक है लेकिन इधर उधर देखने वाली बात तो बहरहाल है नाँ।

एक रिवायत में है कि जब वह सहाबी उस औरत को क़तल करने के बाद रसूलु-ल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंचे और उस के क़तल की इत्तिला दी और जब दुबारा वहां वापस लौटे तो वहां उस औरत के बेटे उसे दफ़न कर रहे थे। यह बात भी काबिल-ए-ग़ौर है कि यह किस तरह मुम्किन है कि इधर वे उसे क़तल करे उधर उस के बेटे उसे कुछ ही देर में दफ़न भी करने आ जाएं। थोड़े से वक़फ़े में फ़ौरी सारे काम हो गए। हमारे लोगों की यह भी तहक़ीक़ है और यह वर्णन कर देता हूँ कि इस के इलावा दीगर इख़तेलाफ़ात जो इस वाक़िया का फ़र्ज़ी और मन घड़त होना साबित करते हैं उनमें यह है कि अक्सर रिवायात में औरत का नाम अस्मा बिंत मरवान दर्ज है जबकि मुसन्निफ़ अल् इस्तेयाब के नज़दीक वह असमा नहीं बल्कि उमेर की बहन बिंत अदी थी।

(अल् इस्तेयाब फ़ी मारेफ़तिल् असहाब भाग 3 वर्णन उमेर बिन अदी अल् ख़तमी पृष्ठ 291 मक्तबा दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

दूसरे यह कि क़ातिल का नाम अक्सर जगहों पर उमेर बिन अदी आया है लेकिन बाअज़ जगह अम्र बिन अदी भी है।

(جوامع السیرۃ لابن حزم पृष्ठ 19 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

जबकि इब्ने दूरेद के नज़दीक क़ातिल का नाम ग़िश्मीर था।

(शरह जरक़ानी अल्ल् मवाहिबुल दुनिया भाग 2 पृष्ठ 342 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

कुछ और रिवायात के मुताबिक़ ऊपर वर्णित में से कोई भी क़ातिल नहीं था बल्कि इस औरत की क़ौम के किसी शख़्स ने उसे क़तल किया था जबकि वे खजूर बेच रही थी।

(شرح زرقانی علی المواھب اللدنیہ भाग 2 पृष्ठ 344 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

इब्ने साद के मुताबिक़ क़तल का समय रात का दरमयानी हिस्सा है जबकि जरक़ानी की रिवायत में दिन या शाम का समय ज़ाहिर होता है क्योंकि रिवायत के मुताबिक़ उस समय मक़्तूला खजूरें बेच रही थी।

(अल् तबकातुल कुबरा ले इब्ने सादभाग 2 पृष्ठ 21 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

(उद्धृत शरह ज़रक़ानी अल्ल मवाहेबुल दुनिया भाग 2 पृष्ठ 344 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

फिर उस वाक़िया के तरीक़-ए-वारदात में भी इख़तेलाफ़ है। मक़्तूला का गला दबाया गया। उस के पेट में ख़ंजर इत्यादि घोंप कर उसे क़तल किया गया। उसे रात सोते में क़तल किया गया या उसे खजूरें लेने के बहाने उस के घर जाकर गला दबाया गया।

फिर यह भी है कि सीरत इब्न हशशाम के मुताबिक़ जब अबू अफ़क को क़तल कर दिया गया तो वह मुनाफ़िक़ हो गई। इस इबारत से ज़ाहिर होता है कि गोया वह पहले मुस्लमान थी और अबू अफ़क के क़तल का सुनकर मुनाफ़िक़ हो गई। अगर इस से पहले मुस्लमान थी तो वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ी करते हुए कैसे हजू लिख सकती थी और मस्जिद की बे-हुरमती कैसे कर सकती थी।

वाक़दी की रिवायत के मुताबिक़ उमेर ने कहा हे अल्लाह मुझ पर तेरे लिए नज़र है कि अगर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ मदीना वापस गया तो मैं ज़रूर उसे क़तल करूँगा जबकि दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुसन्निफ़ के बाक़ौल वे नाबीना थे और इस वजह से ग़ज़व-ए-बदर में शामिल नहीं हो सके थे और इसी मुसन्निफ़ ने इस वाक़िया के तनाज़ुर में वाक़दी के कथन का वर्णन किया है कि वह नाबीना होने के बावजूद जिहाद में हिस्सा लेते थे।

(दायरा मआरूफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पृष्ठ 428-429 दारुल मारूफ़ लाहौर 2022 ई.)

(किताब अल् मग़ाज़ी लिल् वाकदी भाग 1 पृष्ठ 161 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2013 ई.)

ख़ुद ही ग़लत किस्म की रिवायात ख़लत-मलत कर देते हैं। अगर ये फ़र्ज़ी और मन घड़त वाक़िया नहीं है तो तारीख़-ओ-सीरत की बाअज़ कुतुब उदाहरणतः तारीख़ तिबरी, तारीख़ इब्ने कसीर इत्यादि ने इस वाक़े का वर्णन क्यों नहीं किया। केवल कुछ पुस्तकें इत्यादि तबक़ातुल कुबरा इबन-ए-साद इत्यादि ने सरसरी सा वर्णन किया है जबकि कुछ ने सिरे से ही इस वाक़िया का वर्णन तक नहीं किया लेकिन वाक़दी ने इस वाक़िया का वर्णन निसबतन तफ़सील से वर्णन किया है।

कुतुब अहादीस में भी इस वाक़िया का वर्णन नहीं मिलता हालाँकि मुसन्निफ़ीन कुतुब-ए-अहादीस ने इन समस्त रिवायात को अपनी कुतुब में जगह दी है जो रसूलु-ल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ मंसूब हुई हैं तो फिर उस वाक़िया का वर्णन क्यों नहीं किया। फिर यह भी है कि इस रिवायत के मुताबिक़ जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुद इस सहाबी को इस औरत के क़तल के लिए भेजा था तो फिर सहाबी का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इस बात के पूछने का क्या मतलब है कि मुझे उसके क़तल करने से गुनाह तो नहीं मिलेगा जैसा कि मैं ने पहले भी कहा।

अगर यह वाक़िया हुआ होता तो यहूद अवश्य यह कहते कि अमली तौर पर मु-स्लमानों ने पहले अस्मा बिंत मरवान का क़तल करके अह्द को तोड़ा है और मदीने के अमन को ख़राब करना चाहा है जबकि इतिहासकार उदाहरणतः अल्वोजुल् उनफ़ और तारीख़ अल्तिबरी का इत्तिफ़ाक़ है कि मुस्लमानों और यहूदियों की पहली मुख़ा-समत ग़ज़व-ए-बनू क़ेनुक़ाअ है।

(अल् रोजुल उनफ़ भाग 3 पृष्ठ 225 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(तारीख़ तिबरी भाग 2 पृष्ठ 48 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

ख़ुद यहूदियों का तो कोई रद्देअमल ऐसा नहीं है लिहाज़ा ये उमूर इस वाक़े को बहुत ज़्यादा मुश्तबा बल्कि ग़लत साबित करते हैं

शिद्दत पसंद मुल्लां ने इन वाक़ियात को एहमियत देकर इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीम को बदनाम किया है और आजकल इसी तरह मन-घड़त कहानियां बना कर ये मौलवी अहमदियों के ख़िलाफ़ भी शिद्दत पसंदी के इज़हार करते रहते हैं और लोगों को भड़काते रहते हैं।

दूसरा वाक़िया भी इस से मिलता-जुलता ही है वह इन शा अल्लाह आइन्दा वर्णन करूँगा। वह भी वाज़िह तौर पर साबित होता है कि ग़लत है।

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad